हिन्दी पाक्षिक

सेमन्या कणवघाटी

RNI No.: UTTHIN/2013/54659

वर्ष-13 अंक-14 हरिद्वार, सोमवार, 01 जून, 2026 मूल्य-दो रूपया मात्र पृष्ठ-8

युवा शक्ति ही विकसित भारत की सबसे बड़ी ताकत : नितिन नवीन

देहरादून । मुख्यमंत्री आवास स्थित मुख्य सेवक सदन में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी तथा भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री महेंद्र भट्ट की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित 'युवा शक्ति संवाद' कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जनपदों से बड़ी संख्या में युवाओं ने सहभागिता की। कार्यक्रम में युवाओं ने राष्ट्र निर्माण, रोजगार, स्टार्टअप, नवाचार, शिक्षा, कौशल विकास तथा उत्तराखंड के भविष्य से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने विचार एवं सुझाव साझा किए। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने युवाओं के साथ आत्मीय संवाद करते हुए उनके प्रश्नों का विस्तार से उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी सदैव युवाओं को केवल मतदाता नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण भागीदार मानती रही है। उन्होंने कहा कि आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश का युवा आज अवसरों के एक नए युग का साक्षी बन रहा है। डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, स्किल India, मेक इन इंडिया तथा आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियानों ने युवाओं को अपनी प्रतिभा के अनुरूप आगे बढ़ने के अभूतपूर्व अवसर प्रदान किए हैं। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि युवा किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति और अमूल्य पूंजी होते हैं। यदि युवाओं को सही दिशा, उचित अवसर और सकारात्मक वातावरण प्राप्त हो तो वे न केवल अपने जीवन को सफल बनाते हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास की नई इबारत भी लिखते हैं। उन्होंने कहा कि विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में युवाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है और इसी उद्देश्य से केंद्र एवं राज्य सरकार युवाओं के सशक्तिकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत विश्व की सबसे युवा शक्ति वाले देशों में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। प्रधानमंत्री की दूरदर्शी नीतियों के कारण युवाओं को शिक्षा, कौशल विकास, अनुसंधान, नवाचार, डिजिटल तकनीक, स्टार्टअप और स्वरोजगार के क्षेत्र में नए अवसर प्राप्त हुए हैं। आज भारत का युवा नौकरी मांगने वाला नहीं, बल्कि रोजगार सृजित करने वाला बन रहा है।

मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि उत्तराखंड सरकार युवाओं के सपनों को साकार करने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। राज्य में देश का सबसे सख्त नकल विरोधी कानून लागू कर भर्ती प्रक्रियाओं में पारदर्शिता सुनिश्चित की गई है। पिछले चार वर्षों में 32 हजार से अधिक युवाओं को पारदर्शी एवं निष्पक्ष प्रक्रिया के माध्यम से सरकारी रोजगार उपलब्ध कराए गए हैं। इसके साथ ही स्वरोजगार, स्टार्टअप, पर्यटन, कृषि, खेल एवं तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में भी युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

उन्होंने कहा कि डबल इंजन सरकार का उद्देश्य केवल विकास कार्यों को गति देना नहीं, बल्कि ऐसे अवसरों का निर्माण करना भी है, जिनसे प्रदेश का प्रत्येक युवा अपनी प्रतिभा के बल पर आगे बढ़ सके। उत्तराखंड का युवा आज नई ऊर्जा, आत्मविश्वास और संकल्प के साथ विकसित उत्तराखंड तथा विकसित भारत के निर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

कार्यक्रम के दौरान युवाओं ने भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन नवीन एवं मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में युवाओं के हित में किए जा रहे कार्यों की सराहना की। युवाओं ने विश्वास व्यक्त किया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और भाजपा की जनकल्याणकारी नीतियों के माध्यम से भारत को विश्व की अग्रणी शक्ति बनाने का लक्ष्य निश्चित रूप से प्राप्त होगा। 'युवा शक्ति संवाद' कार्यक्रम उत्साह, ऊर्जा और सकारात्मक विचारों का संगम बनकर उभरा। कार्यक्रम में उपस्थित युवाओं ने राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी का संकल्प लेते हुए विकसित भारत और विकसित उत्तराखंड के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का भरोसा व्यक्त किया।

कुंभ की तैयारी को लेकर विकास कार्यों का जायजा लिया

हरिद्वार । कुंभ मेले की तैयारियों को लेकर मेला प्रशासन ने अवस्थापना एवं निर्माण कार्यों में तेजी ला दी है। शुक्रवार को अपर मेलाधिकारी दयानंद सरस्वती ने लोक निर्माण विभाग, नगर निगम और तकनीकी सेल के अधिकारियों के साथ भूपतवाला-सप्तसरोवर क्षेत्र का स्थलीय निरीक्षण कर सड़कों की स्थिति और चल रहे विकास कार्यों का जायजा लिया। अपर मेलाधिकारी ने कहा कि मेला प्रशासन इस क्षेत्र की सड़कों के सुधार को अत्यंत गंभीरता से ले रहा है। मेलाधिकारी द्वारा भी पूर्व में कई बार क्षेत्र का निरीक्षण कर स्थानीय समस्याओं का गहन अध्ययन किया गया तथा सड़कों के सुधार कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण करने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने भारत माता मंदिर को राष्ट्रीय राजमार्ग से जोड़ने वाले मार्ग के शीघ्र एवं गुणवत्तापूर्ण सुधार के लिए लोक निर्माण विभाग एवं नगर निगम के अधिकारियों को तत्काल प्रभाव से कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यह मार्ग श्रद्धालुओं एवं यात्रियों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, जहां प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोगों का आवागमन होता है। ऐसे में इस सड़क का समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निर्माण आवश्यक है। अपर मेलाधिकारी ने कुंभ मेला-2027 के दृष्टिगत क्षेत्र में श्रद्धालुओं की सुविधाओं, स्वच्छता व्यवस्था तथा नालियों की नियमित एवं समुचित सफाई सुनिश्चित करने के निर्देश भी अधिकारियों को दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने धनौरी-सिडकुल मार्ग पर पथरी रौ नदी पर निर्माणाधीन दो लेन मोटर पुल के कार्यों का भी स्थलीय निरीक्षण कर प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने कार्यदायी संस्था को निर्माण कार्यों में और तेजी लाने के निर्देश देते हुए निर्धारित समयसीमा एवं गुणवत्ता मानकों के अनुरूप कार्य पूर्ण करने की सख्त हिदायत दी। इस दौरान अधिशासी अभियंता सिंचाई अनुभव नौटियाल, तकनीकी सेल के अभियंता श्री अतुल शांडिल्य सहित लोनिवि व नगर निगम के अधिकारी उपस्थित रहे।

गंगा में किसी भी सूरत में कूड़ा कचरा नहीं जाना चाहिए: डीएम

हरिद्वार । जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने कहा कि मां गंगा को स्वच्छ और निर्मल बनाए रखना सभी की जिम्मेदारी है। गंगा नदी में किसी भी दशा में कूड़ा-कचरा नहीं जाना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति गंगा में कूड़ा डालकर प्रदूषण फैलाता पाया गया तो उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने सभी संबंधित विभागों को घाटों पर नियमित निगरानी बढ़ाने और प्रभावी नियंत्रण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। जिला गंगा संरक्षण समिति की 73वीं बैठक शनिवार को जिला कार्यालय सभागार में जिलाधिकारी की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में नगर आयुक्त नंदन कुमार, प्रभागीय वनाधिकारी स्वप्निल अनिरुद्ध समेत विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। जिलाधिकारी ने नगर निगम को निर्देश दिए कि सभी घाटों पर ऐसे साइन बोर्ड लगाए जाएं, जिनके माध्यम से श्रद्धालुओं और स्थानीय नागरिकों को गंगा में कूड़ा-कचरा व पुराने कपड़े न फेंकने के लिए जागरूक किया जा सके। साथ ही लाउडस्पीकर के जरिए भी लगातार जनजागरूकता अभियान चलाया जाए। बैठक में हरकी पैड़ी क्षेत्र के घाटों और पुलों पर अतिक्रमण रोकने के निर्देश भी दिए गए। जिलाधिकारी ने कहा कि शहर और हरकी पैड़ी क्षेत्र में किसी भी स्थिति में सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग नहीं होना चाहिए। प्लास्टिक और पन्नी का इस्तेमाल करने वाले व्यापारियों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाए। उन्होंने क्षतिग्रस्त और उपेक्षित घाटों की सूची नगर निगम को उपलब्ध कराने तथा श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए चिन्हित पुलों पर शीघ्र सुरक्षा जालियां लगाने के निर्देश दिए। इसके अलावा जनपद में संचालित सभी सीवेज और सेप्टिक टैंकरों का अनिवार्य पंजीकरण एवं सत्यापन सुनिश्चित करने को कहा। बिना पंजीकरण के कोई भी टैंकर संचालित नहीं होगा। साथ ही सीवेज को नालियों में डालने वालों पर सख्त कार्रवाई के निर्देश भी दिए गए। जिलाधिकारी ने नगर निगम और सिंचाई विभाग को बरसात से पहले नालियों की सफाई प्राथमिकता के आधार पर कराने के निर्देश दिए, ताकि जलभराव की समस्या उत्पन्न न हो सके। बैठक में नमामि गंगे परियोजना और गंगा संरक्षण से जुड़े विभिन्न मुद्दों की भी समीक्षा की गई। बैठक में नगर आयुक्त नंदन कुमार, प्रभागीय वनाधिकारी स्वप्निल अनिरुद्ध, अधिशासी अभियंता सिंचाई ओमजी गुप्ता ,प्रोजेक्ट मैनेजर पेयजल निगम (गंगा)मीनाक्षी मित्तल,सहायक आयुक्त खाद्य सुरक्षा महिमानंद जोशी,आर ओ यूके पीसीबी डॉ राजेंद्र सिंह,उप मुख्य नगर आधिकारी एम के यादव, जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी मीरा रावत ,जिला परियोजना अधिकारी नमामि गंगे सत्यदेव आर्य ,समिति के सदस्य मनोज निषाद, हिमांशु सरीन एवं सम्बन्धित अधिकारी मौजूद रहें।

सम्पादकीय

अभी भी देर नही हुई

एक बड़ी समस्या बच्चों में ऑनलाइन गेमिंग की बढ़ी लत है। इसे कैसे नियंत्रित और अनुशासित किया जाए, इस चुनौती का सामना तमाम समाजों को करना पड़ रहा है। भारत में क्या किया जाए, यह महत्त्वपूर्ण सवाल है। ऑनलाइन गेमिंग को विनियमित करने का कानून पारित करने के लगभग एक साल बाद केंद्र ने इस पर अमल के नियम तय किए हैं। स्पष्टत: इनमें गेमिंग के हानिकारक असर और तकनीकी प्रगति के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया गया है। कहा जा सकता है कि इस कोशिश में सरकार काफी हद तक सफल है। ऑनलाइन गेमिंग प्रोत्साहन एवं विनियमन कानून मुख्य रूप से ऑनलाइन जुए को रोकने के लिए बनाया गया था। गेम के नाम पर तब सट्टेबाजी का धंधा इतने बड़े पैमाने पर फैलाया गया कि परिवारों के बर्बाद होने की खबरें आम हो गई थीं। इसका चस्का लगाने के लिए खास कर क्रिकेट मैचों को जरिया बनाया गया। इसीलिए जब सरकार ने उस पर रोक लगाई, तो समाज के विवेकशील तबकों ने राहत महसूस की। ये अच्छी बात है कि उद्योग जगत की भारी लॉबिंग के बावजूद सरकार अपने इरादे पर अडिग रही है। तय नियमों के तहत जिन गेम्स में पैसे का लेन-देन होता है, उन पर रोक लगी रहेगी। इनमें पोकर, रमी, फैंटेसी स्पोर्ट्स और दांव लगाने से संबंधित गेम शामिल हैं। बाकी ई-स्पोर्ट्स को वैध प्रतिस्पर्धा माना गया है। ऐसे गेम्स को डेवलप करने और संचालित करने पर सामान्यत: कोई रोक नहीं होगी। अगर किसी मामले में सरकार को लगता है कि उस गेम के हानिकारक प्रभाव हो रहे हैं, तो उस पर जरूर रोक लगाई जा सकेगी। इन पर निगरानी के लिए सूचना तकनीक मंत्रालय के तहत एक ऑनलाइन गेमिंग प्राधिकरण बनाया जाएगा। ये सारे नियम सही दिशा में हैं। लेकिन इन नियमों के दायरे से बाहर रह गई एक बड़ी समस्या बच्चों और किशोरों में ऑनलाइन गेमिंग की बढ़ी लत है। इसे कैसे नियंत्रित और अनुशासित किया जाए, इस चुनौती का सामना तमाम समाजों को करना पड़ रहा है। कुछ देशों में इसकी वैधानिक व्यवस्था की गई है, जिसमें इस रुझान को अनुशासित करने का दायित्व संचालक कंपनियों पर डाला गया है। भारत में इस दिशा में क्या किया जाए, यह महत्त्वपूर्ण सवाल है। लगे हाथ सरकार को इस बारे में भी चर्चा छेड़नी चाहिए थी। बहरहाल, अभी भी देर नही हुई है।

सिकुड़ रही आमदनी बढ़ने की गुंजाइशें

पीएलएफएस के मुताबिक श्रमिकों को कोरोना काल के पहले एक हफ्ते में जितने घंटे मिलते थे, आज उससे कम मिल रहे हैं। ऐसे में श्रमिकों की सौदेबाजी की क्षमता गिरी है और कार्य-स्थितियां बिगड़ी हैं। नतीजा बढ़ती श्रमिक अशांति है। भारत में 2025 में श्रमिकों के लिए कम कामकाजी घंटे उपलब्ध हुए। यह तथ्य ताजा आवधिक श्रम शक्ति सर्वेक्षण (पीएलएफएस) से सामने आया है। इस हाल के निहितार्थ दूरगामी हैं। बारीक नजर डालें, तो मालूम पड़ेगा कि विभिन्न हिस्सों में इस समय दिख रही श्रमिक अशांति से लेकर एफएमसीजी (यानी तेल-साबुन जैसी रोजमर्रा उपयोग की वस्तुएं बनाने वाली) कंपनियों पर बढ़ते दबाव के पीछे इसकी भूमिका है। एक खबर के मुताबिक इक्विटी निवेशक भारत की एफएमसीजी कंपनियों से मुंह मोड़ रहे हैं। यानी उन्हें नहीं लगता कि इन कंपनियों की बिक्री और मुनाफे में स्वस्थ बढ़ोतरी होगी। इस बढ़ोतरी का संबंध आम जन की आमदनी और उपभोग से है, जबकि आमदनी बढ़ने की गुंजाइशें सिकुड़ रही हैं। पीएलएफएस के मुताबिक श्रमिकों को कोरोना काल के पहले एक हफ्ते में जितने घंटे मिलते थे, आज उससे कम मिल रहे हैं। भारत की श्रम शक्ति में 56 फीसदी हिस्सा स्वरोजगार कर्मियों का है। जनवरी- दिसंबर 2025 की अवधि में ऐसे कर्मियों को उपलब्ध काम के घंटों में सबसे बड़ी गिरावट आई। जुलाई 2018 से जून 2019 के बीच ऐसे कर्मियों को हफ्ते में औसतन 46.6 घंटे का काम मिल जाता था। मगर पिछले वर्ष ये औसत 39.6 घंटे प्रतिशत रहा। दिहाड़ी और वेतनभोगी कर्मियों के कामकाजी घंटे क्रमश: 43.1 और 50.2 से घटकर 41.2 और 48.8 घंटे रह गए। स्पष्टत: इन सबकी औसत आमदनी घटी। नई परिभाषा के तहत घरेलू कार्य में मददगार परिजनों को भी कामकाजी माना जाता है। गांवों में ज्यादातर महिलाएं इस दायरे में आती हैं। उनके कामकाजी घंटे 2018-19 के 38.2 घंटों की तुलना में पिछले साल 32.6 घंटे रह गए। नतीजतन, शहरों की तरफ पलायन के रूप में हुआ है, जबकि वहां भी अवसर घटे हैं। ऐसे में श्रमिकों की सौदेबाजी की क्षमता गिरी है। अत: कंपनियों में उनसे न्यूनतम वेतन पर 12 घंटों तक काम लिया जा रहा है। इसके बावजूद जब रोजमर्रा की जरूरतें पूरी नहीं होतीं, तो नोएडा जैसे हालात बनते हैं। इस कारण मांग और उपभोग भी गिरता है, तो कंपनियों का मुनाफा प्रभावित होता है। भारत में ये दुश्चक्र गंभीर होता जा रहा है।

प्राचीन भारतीय वांग्मय में कन्द परंपरा

-अशोक 'प्रवृद्ध'

भारतीय कृषि संस्कृति अनादि काल से प्रकृति केंद्रित रही है। ऋग्वेद से लेकर आयुर्वेद के संहिताओं तक, भूमिगत भोज्य पदार्थों को कन्द की संज्ञा दी गई है। आयुर्वेद के मूर्धन्य ग्रंथ चरक संहिता तथा सुश्रुत संहिता में कन्द वर्ग के अंतर्गत उन सभी भोज्य पदार्थों का वर्गीकरण है, जो भूमि के भीतर पुष्ट होते हैं। रामायण एवं महाभारत महाकाव्यों में तपस्वियों के मुख्य आहार के रूप में कन्द-मूल का बारंबार उल्लेख मिलता है। यह इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि श्वेतसार अर्थात स्टार्च से युक्त भूमिगत कन्द भारतीय भोजन के आदिम और पवित्रतम अवयव रहे हैं। अमरकोश तथा भावप्रकाश निघण्टु आदि ग्रंथों में कन्द विशेष के लिए आलुक (आलू का संस्कृत मूल) शब्द का प्रयोग मिलता है। प्राचीन ग्रन्थों में रक्तालू (शकरकन्द, स्वीट पोटैटो) और पिण्डालू का वर्णन यह सिद्ध करता है कि भारतीय मनीषी कन्द प्रजातियों के सूक्ष्म भेदों से भली- भांति परिचित थे। आधुनिक पाश्चात्य इतिहासकारों का मत है कि आलू (सोलनम ट्यूबरोसम) को सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगालियों द्वारा भारत लाया गया। किन्तु यदि सूक्ष्म विश्लेषणात्मक दृष्टि से देखा जाए, तो भारत की कन्द खेती की परंपरा केवल आयातित फसलों पर निर्भर नहीं थी। भारतीय उपमहाद्वीप में वराहीकन्द और हस्तिकन्द जैसी स्थानीय प्रजातियां सदियों से विद्यमान थीं। पुर्तगालियों के आगमन से पूर्व भी भारत के सुदूर वनवासियों और कृषकों के पास कन्दों को कूटकर, सुखाकर अथवा उबालकर खाने की स्वदेशी प्रणालियां विकसित थीं। अत: यह कहना अधिक न्यायसंगत होगा कि पुर्तगालियों ने आलू की एक विशिष्ट विदेशी प्रजाति का व्यावसायीकरण किया, न कि भारत को कन्द की अवधारणा से परिचित कराया। 30 मई को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय आलू दिवस मात्र एक उत्सव नहीं, बल्कि भुखमरी के विरुद्ध वैश्विक संघर्ष का प्रतीक है। धान और गेहूं की तुलना में कन्द फसलें कम जल और विषम जलवायु में भी प्रचुर ऊर्जा (कैलोरी) प्रदान करने में सक्षम हैं। कन्दों की कृषि भूमि के भीतर होने के कारण यह कड़ाके की ठण्ड और आंशिक सूखे को सहन कर सकती है, जिससे यह खाद्य सुरक्षा का एक सुदृढ़ स्तम्भ बनती है। वैश्विक पटल पर अंतर्राष्ट्रीय आलू दिवस का आयोजन इस सत्य को पुन: प्रतिपादित करता है कि भूमिपुत्रों के लिए कन्द सदैव से जीवनदायिनी ऊर्जा का स्रोत रहा है। आधुनिक विज्ञान जहां आज आलू के जीनोम संपादन और पोषक तत्वों पर शोध कर रहा है, वहीं प्राचीन भारतीय मनीषा ने सहस्रों वर्ष पूर्व ही आलुक के महत्त्व को पहचान कर उसे यज्ञीय और सात्विक आहार में स्थान दे दिया था। आवश्यकता इस बात की है कि हम पश्चिम के थोपे गए इतिहास बोध से मुक्त होकर अपनी कृषि-विरासत का पुनर्मूल्यांकन करें।

प्राचीन भारतीय चिकित्सा विज्ञान ने भूमिगत कन्दों को केवल उदरपूर्ति का साधन नहीं माना, अपितु उन्हें विशिष्ट औषधीय गुणों से युक्त भेषज (औषधि) के रूप में वर्गीकृत किया। भावप्रकाश निघण्टु में कन्दों का उनके मूल स्वभाव से संबंधित विशिष्ट सिद्धांतों पर वर्गीकरण किया गया है। कन्द स्वभाव से गुरु (पचने में भारी) तथा मधुर रस (मीठे स्वाद) से युक्त होते हैं। यह गुण शरीर में कफ धातु को बढ़ाता है तथा वात दोष का शमन करता है। पिण्डालू, वराहीकन्द आदि अधिकांश प्राचीन कन्द शीत वीर्य अर्थात ठंडी तासीर के होते हैं, जो शरीर के भीतर की अतिरिक्त ऊष्मा और पित्त जनित विकारों को शांत करते हैं। ये कन्द शरीर को त्वरित बल प्रदान करते हैं, किंतु अधिक मात्रा में सेवन करने पर विष्टम्भ (मल अवरोध या गैस) उत्पन्न करते हैं। प्राचीन मनीषियों ने इसी कारण इन्हें शुद्ध घी, जीरा, हींग और मरिच (काली मिर्च) के साथ पकाकर खाने का निर्देश दिया, ताकि इनका वात-कारक प्रभाव नष्ट हो सके।

प्राचीन ग्रंथों में विभिन्न कन्दों की आंतरिक संरचना के आधार पर उनके भिन्न-भिन्न उपचारात्मक गुण बताये गए हैं। वराहीकन्द (शूकर कन्द) को शाश्वत युवावस्था का स्रोत माना गया है। भावप्रकाश निघण्टु में वराहीकन्द को रसायन माना गया है। इसके नियमित और नियंत्रित सेवन से शरीर की कोशिकाएं पुनर्जीवित होती हैं। यह कन्द त्वचा के गंभीर रोगों (कुष्ठ) और मधुमेह (प्रमेह) के उपचार में अत्यंत प्रभावी माना गया है। आधुनिक विज्ञान भी इसमें पाए जाने वाले डायोसजेनिन को हार्मोनल संतुलन के लिए उपयोगी मानता है। पिण्डालू का वर्णन एक अत्यंत शीतल कन्द के रूप में मिलता है। आंतरिक घाव, आमाशय की अति अम्लता और पेट के छालों को ठीक करने के लिए पिण्डालू का सेवन हितकर बताया गया है। यह रक्त में मौजूद विषाक्त पदार्थों को बाहर निकाल कर रक्त को शुद्ध करता है। यह कन्द शरीर में मज्जा और शुक्र धातु को पुष्ट करता है। यह दुर्बल शरीर वाले रोगियों के लिए एक उत्कृष्ट वृष्य आहार के रूप में प्रयुक्त होता था। आज का पोषण विज्ञान जिसे प्रतिरोधी स्टार्च कहता है, प्राचीन आचार्यों ने उसे विष्टम्भी अग्नि शामक गुण के रूप में पहले ही रेखांकित कर दिया था। जब हम प्राचीन आलुक (कन्दों) को उबालकर अथवा भूनकर खाते हैं, तो वह शरीर के भीतर धीमी गति से पचने वाला ईंधन बनता है। यह आधुनिक युग की तीव्र गति से रक्त शर्करा बढ़ाने वाली प्रणालियों के विपरीत, शरीर को स्थिर ऊर्जा प्रदान करता है। स्पष्ट है कि कन्द केवल एक शाक (सब्जी) नहीं, बल्कि मानव शरीर को दीर्घकाल तक स्वस्थ रखने वाली एक प्राकृतिक औषधीय विधा है। हमारे प्राचीन पूर्वजों को इस शाश्वत सत्य का भान था कि भूमिपुत्र कन्द जहां अत्यधिक ऊर्जावान होते हैं, वहीं उनमें कुछ ऐसे प्राकृतिक विषैले तत्व भी होते हैं जो उदरशूल (पेट दर्द) या वात प्रकोप कर सकते हैं। भावप्रकाश निघण्टु के अनुसार इन कन्दों को भेषज (औषधि) या निरापद खाद्य बनाने के लिए कुछ शोधन विधियां अपनाई जाती थीं। कन्दों को छीलकर ठंडे या गुनगुने जल में कुछ घंटों के लिए छोड़ दिया जाता था। आधुनिक विज्ञान सिद्ध करता है कि इससे कन्दों में मौजूद सैपोनिन आदि अतिरिक्त घुलनशील विषैले तत्व जल में घुलकर बाहर निकल जाते हैं। कन्दों को शुद्ध जल में थोड़ा सा सैंधव लवण (सेंधा नमक) अथवा हल्दी डालकर उबाला जाता था। यह प्रक्रिया कन्द की गुरुता (भारीपन) को कम कर उसे सुपाच्य बनाती थी। कन्दों को गरम भस्म (राख) या अंगारों पर भूनने का विधान था। यह प्रक्रिया कन्द के भीतर के विष्टम् (गैस बनाने वाले) स्वभाव को नष्ट कर उसमें दीपन (भूख बढ़ाने वाला) गुण उत्पन्न करती थी। आधुनिक आलू जहां वैश्विक स्तर पर त्वरित कैलोरी की आपूर्ति का एक सुलभ साधन है, वहीं प्राचीन भारतीय कन्द पोषण के साथ आरोग्य का शाश्वत सूत्र थे। प्राचीन मनीषियों ने शोधन की जो वैज्ञानिक परंपरा विकसित की थी, वह आज के फूड प्रोसेसिंग का ही परिष्कृत और प्राकृतिक रूप थी। अत: अंतर्राष्ट्रीय आलू दिवस पर आधुनिक कृषि विज्ञान को प्राचीन कन्दों के इस रासायनिक व औषधीय सत्य से सीख लेते हुए ऐसी प्रजातियों के संवर्द्धन पर ध्यान देना चाहिए, जो पेट भरने के साथ-साथ शरीर को निरोगी भी रखें।

भारतीय उपमहाद्वीप के छोटानागपुर पठार, बस्तर के अरण्य और पूर्वी हिमालय आदि दुर्गम वनांचलों और जनजातीय क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासियों के पास आज भी कन्दों का एक समृद्ध जैव विविधता बैंक सुरक्षित है। झारखंड के गुमला, लोहरदगा, लातेहार जिलों की सीमान्त पाट क्षेत्रों में निवास करने वाली कोरवा, बिरहोर, असुर, नगेसिया आदि जनजातियां स्वास्थ्य, यौन और कई गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए चिरचिटी, बांदा आदि अनेक जड़ी- बूटियों का उपयोग करती हैं। मध्य भारत के वनों में पाए जाने वाले करू नामक कन्द का उपयोग जनजातीय समाज पारंपरिक रूप से भीषण अकाल के समय ऊर्जा के अंतिम स्रोत के रूप में करता आया है। उत्तराखंड के मध्य हिमालयी क्षेत्रों में उगने वाला गींथी या गिट्ठी नामक यह कन्द बाह्य रूप से आलू जैसा दिखता है, किंतु इसकी आंतरिक क्षमताएं अत्यंत चमत्कारी हैं। स्थानीय लोग इसका उपयोग वात रोगों और शारीरिक सुस्ती को दूर करने के लिए करते हैं। तारूड़ ठंडे पर्वतीय क्षेत्रों का एक ऐसा कन्द है जो कड़ाके की ठंड में शरीर के आंतरिक तापमान को संतुलित रखने की अनूठी क्षमता रखता है।

पश्चिमी फार्मास्युटिकल उद्योग आज उन यौगिकों के लिए भारतीय कन्दों पर निर्भर हो रहा है, जिन्हें हमारे ऋषियों ने सहस्रों वर्ष पूर्व रसायन कहा था। आधुनिक वैज्ञानिक शोधों से सिद्ध हुआ है कि वराहीकन्द में पाए जाने वाले फ्लेवोनोइड्स और एंटीऑक्सीडेंट्स मानव शरीर में मुक्त कणों को नष्ट करते हैं। यह क्रिया ट्यूमर कोशिकाओं की वृद्धि को रोकने में सहायक पाई गई है। इन कन्दों में मौजूद डायोसजेनिन नामक स्टेरॉइडल सैपोनिन का उपयोग आधुनिक चिकित्सा में प्रोजेस्टेरोन और अन्य जीवन रक्षक कॉर्टिकोस्टेरॉइड्स के संश्लेषण के लिए मुख्य कच्चे माल के रूप में किया जा रहा है। यह महिलाओं में रजोनिवृत्ति के बाद होने वाली जटिलताओं में अत्यंत प्रभावी है। मधुमेह एवं चयापचय नियंत्रण, इंसुलिन प्रतिरोध को कम करने के लिए इन कन्दों के अर्क पर व्यापक शोध चल रहे हैं, क्योंकि ये आधुनिक आलू की तरह रक्त शर्करा को अचानक नहीं बढ़ाते। अंतर्राष्ट्रीय आलू दिवस केवल एक आधुनिक कृषि उत्पाद का उत्सव नहीं है, बल्कि यह मनुष्य और भूमि के भीतर छिपी कन्द ऊर्जा के आदिम संबंधों को पुनर्परिभाषित करने का एक वैश्विक अवसर है। इतिहास की विडंबना रही कि लातिनी अमेरिकी आलू के वैश्विक औपनिवेशिक विस्तार ने भारत की अपनी समृद्ध, औषधीय और त्रिदोष-शामक कन्द परंपरा को नेपथ्य (पीछे) में धकेल दिया। आधुनिक विज्ञान आज जिस निष्कर्ष पर घूम-फिर कर पहुंच रहा है, चाहे वह प्रतिरोधी स्टार्च का महत्व हो, बायो प्लास्टिक का निर्माण हो या कैंसर रोधी औषधियों की खोज, उसका मूल ढांचा हमारे आयुर्वेद के निघण्टुओं और वनांचलों की ज्ञान परंपरा में पहले से ही पूर्णत: मौलिक रूप में स्थापित था। अत: इस वैश्विक मंच पर भारत की वास्तविक कृषि विरासत की पुनर्प्रतिष्ठा तभी संभव है, जब हम आधुनिक आलू के साथ-साथ अपनी प्राचीन आलुक और कन्द प्रजातियों का भी वैज्ञानिक संरक्षण, संवर्द्धन और व्यवसायीकरण करें। यही लोक कल्याण और वैश्विक खाद्य सुरक्षा का शाश्वत और सनातन मार्ग है।

हरिद्वार में गंगा का जलस्तर घटा, सिंचाई को पर्याप्त पानी नहीं

हरिद्वार । टिहरी बांध और श्रीनगर बांध से भागीरथी और अलकनंदा नदी में पानी की निकासी घट रही है। इस वजह से पहाड़ी क्षेत्रों से भीमगोड़ा बैराज पर रोजाना 14078 क्यूसेक पानी कम पहुंच रहा है। पानी घटने के बाद निचले इलाकों में सिंचाई के लिए मांग के अनुरूप जल की निकासी नहीं हो रही है। साथ ही, हरकी पैड़ी और गंगा घाटों पर पानी की मात्रा कम हो गई है। टिहरी बांध से भागीरथी नदी और श्रीनगर बांध से अलकनंदा नदी में पानी की निकासी होती है। देवप्रयाग से यह पानी ऋषिकेश और ऋषिकेश पशुलोक बैराज से भीमगोड़ा बैराज तक पहुंचता है। सामान्य दिनों में रोजाना बैराज पर न्यूनतम 25000 क्यूसेक पानी पहुंचता है। लेकिन हाल के दिनों में पानी की मात्रा घट रही है। वर्तमान में रोजाना बैराज पर 10922 क्यूसेक पानी पहुंच रहा है। भीमगोड़ा बैराज की 766000 क्युसिक की कैपेसिटी है, लेकिन पानी का इनफ्लो घटने के बाद पानी की मात्रा कम पड़ रही है। इनफ्लो घटने के बाद उत्तर प्रदेश के निचले इलाकों में खेतों की सिंचाई के लिए निर्धारित मात्रा में पानी नहीं पहुंच रहा है। निचले इलाकों में खेतों की सिंचाई के लिए 13000 क्यूसेक पानी की मांग बनी हुई है, लेकिन बैराज से गंगनहर में 9500 क्यूसेक पानी की निकासी हो रही है।

कृषि ड्रोन के उपयोग में अनियमितता का आरोप

हरिद्वार । जनपद में किसानों के लिए खरीदे गए कृषि ड्रोन के उपयोग में कथित अनियमितताओं का मामला अब प्रशासनिक स्तर तक पहुंच गया है। गन्ना विकास समिति लिमिटेड सीतापुर-ज्वालापुर के उपाध्यक्ष विशेष चौहान ने जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपकर बहुउद्देशीय जमालपुर किसान सेवा सहकारी समिति समेत अन्य समितियों में कृषि ड्रोन के संचालन और सरकारी धन के दुरुपयोग की निष्पक्ष जांच की मांग की है। ज्ञापन में कहा गया कि सरकार ने किसानों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने और खेती को कम लागत और आसान बनाने के उद्देश्य से कृषि ड्रोन उपलब्ध कराए थे। इन ड्रोन के माध्यम से कम समय में दवा और उर्वरक का छिड़काव कर बेहतर उत्पादन का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन कुछ समितियों में किसानों को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है। विशेष चौहान ने आरोप लगाया कि उन्होंने आठ मई 2026 को 60 से 70 बीघा भूमि में छिड़काव के लिए समिति में आवेदन दिया गया था, लेकिन कई दिन बीतने के बाद भी कार्रवाई नहीं हुई और बाद में आवेदन वापस कर दिया गया। उन्होंने कहा कि इससे किसानों में नाराजगी है और सरकारी योजनाओं की पारदर्शिता पर सवाल खड़े हो रहे हैं। मामले का संज्ञान लेते हुए जिलाधिकारी ने जिला सहायक निबंधक को जांच के निर्देश दिए हैं। वहीं, अपर जिला सहकारी अधिकारी की अध्यक्षता में जांच कमेटी गठित कर जांच शुरू कर दी गई है।

गर्भवती महिला समेत चार लोगों से मारपीट में आरोपी पर मुकदमा

हरिद्वार । थाना पथरी क्षेत्र की फेरूपुर चौकी में गर्भवती महिला समेत चार लोगों के साथ मारपीट का मामला सामने आया है। पुलिस ने पीड़ित पक्ष की तहरीर पर शुक्रवार को आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार ईश्वर सिंह ने फेरूपुर चौकी में दी गई तहरीर में बताया कि 22 मई की रात करीब 8:15 बजे पुरानी कुंडी निवासी मोनू उनके घर पहुंचा। आरोप है कि मोनू शराब के नशे में था और हाथ में डंडा लिए हुए था। घर पहुंचते ही आरोपी ने गाली-गलौज शुरू कर दी और विरोध करने पर मारपीट करने लगा। शिकायत के मुताबिक आरोपी ने ईश्वर सिंह, उनकी पत्नी सपना, भतीजी वंशिका और बहन कविता के साथ मारपीट की। आरोप है कि डंडे और पत्थरों से हमला किया गया, जिसमें वंशिका और कविता को गंभीर चोट लगी है। पीड़ित पक्ष का आरोप है कि नौ माह की गर्भवती सपना के पेट पर भी पत्थर फेंककर हमला किया गया, जिससे उनकी हालत बिगड़ गई। पथरी थाना प्रभारी रविन्द्र कुमार ने बताया कि तहरीर के आधार पर आरोपी मोनू के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। मामले की जांच की जा रही है और जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

नसीरपुर कलां मारपीट मामले में क्रॉस मुकदमे दर्ज

हरिद्वार । थाना पथरी क्षेत्र के नसीरपुर कलां गांव में हुए विवाद के बाद दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर गंभीर आरोप लगाते हुए मुकदमे दर्ज कराए हैं। शुक्रवार को पुलिस ने दोनों पक्षों की तहरीरों के आधार पर कुल 14 लोगों के खिलाफ क्रॉस मुकदमे दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार गांव निवासी मुस्तफा ने फेरूपुर चौकी में दी गई तहरीर में बताया कि 25 मई की शाम करीब सात बजे वह अपने घर पर मौजूद था। आरोप है कि इसी दौरान प्रधान पति साजिद अली उर्फ साजिद अंसारी, मुन्सब, नसीरुद्दीन, मोहब्बत, तसलीम टेलर और सलीम उसके घर में घुस आए। आरोपियों ने घर में मौजूद महिलाओं और बच्ची के साथ अभद्रता की तथा विरोध करने पर उसके साथ मारपीट कर दी। मुस्तफा का आरोप है कि हमले में उसके पैर में गंभीर चोट आई और फ्रैक्चर हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायल का मेडिकल कराया। पुलिस ने तहरीर के आधार पर छह नामजद आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। वहीं दूसरे पक्ष से ग्राम प्रधान पति साजिद अली ने पुलिस को दी गई तहरीर में आरोप लगाया कि वह 25 मई की शाम करीब छह बजे गांव में चल रहे नाली निर्माण कार्य का निरीक्षण कर रहे थे। इसी दौरान पुरानी रंजिश के चलते जावेद, आलीम, वहाब, मुर्तजा, अमजद और मुस्तफा ने अपने दो अन्य साथियों के साथ मिलकर उन पर हमला कर दिया। पथरी थाना प्रभारी रविन्द्र कुमार ने बताया कि दोनों पक्षों की तहरीरों पर क्रॉस मुकदमे दर्ज कर लिए गए हैं।

मुख्यमंत्री धामी के विजन को मिल रही गति, बागवाला में बने 1872 प्रधानमंत्री आवास जल्द होंगे लाभार्थियों को आवंटित

रुद्रपुर में आवास, ट्रांसपोर्ट नगर और कॉमर्शियल हब परियोजनाओं का निरीक्षण, सचिव डॉ. आर. राजेश कुमार ने दिए त्वरित क्रियान्वयन के निर्देश

देहरादून । मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के दिशा-निर्देशों के अनुरूप प्रदेश में आवासीय एवं शहरी विकास परियोजनाओं को तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है। इसी क्रम में शुक्रवार को सचिव आवास एवं राज्य सम्पत्ति डॉ. आर. राजेश कुमार ने उधमसिंहनगर जनपद के रुद्रपुर विधानसभा क्षेत्र में पहुंचकर विकास प्राधिकरण की विभिन्न निर्माणाधीन एवं प्रस्तावित परियोजनाओं का स्थलीय निरीक्षण किया तथा अधिकारियों को समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण कार्य सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान सचिव आवास एवं राज्य सम्पत्ति डॉ. आर. राजेश कुमार ने बागवाला में प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत लगभग 156 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित 1872 आवासों का जायजा लिया। उन्होंने निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि इन आवासों का लोकार्पण शीघ्र किया जाएगा और पात्र लाभार्थियों को आवासों की चाबियां सौंपी जाएंगी। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जिन लाभार्थियों द्वारा अभी तक निर्धारित अंशदान जमा नहीं किया गया है, उनसे शीघ्र धनराशि जमा कराकर आवंटन प्रक्रिया को गति दी जाए। उपाध्यक्ष विकास प्राधिकरण ने बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत प्रति आवास 3 लाख रुपये की सहायता सरकार द्वारा प्रदान की जाती है, जबकि 3 लाख रुपये लाभार्थी को जमा करने होते हैं। उन्होंने बताया कि अब तक 185 लाभार्थियों द्वारा पूरी धनराशि जमा की जा चुकी है, जबकि 222 लाभार्थियों को पत्र एवं दूरभाष के माध्यम से भुगतान हेतु सूचित किया गया है। सचिव जिला विकास प्राधिकरण ने जानकारी दी कि आवास परिसर में साफ-सफाई, सौंदर्यीकरण एवं पौधारोपण का कार्य तेजी से चल रहा है। परिसर में निर्मित सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) की टेस्टिंग भी सफलतापूर्वक पूरी कर ली गई है। निरीक्षण के दौरान सचिव ने अधिकारियों को प्रधानमंत्री आवास योजना 2.0 के लिए भी उपयुक्त भूमि चिन्हित करने के निर्देश दिए। इसके बाद सचिव डॉ. आर. राजेश कुमार ने त्रिशूल चौक के समीप लोक निर्माण विभाग की 6.5 एकड़ भूमि का निरीक्षण किया, जहां प्रस्तावित 'कुमाऊं कॉमर्शियल कुटीर' बहुमंजिला परियोजना विकसित की जानी है। अधिकारियों ने बताया कि इस परियोजना के अंतर्गत आधुनिक आवासीय एवं व्यावसायिक भवनों का निर्माण किया जाएगा तथा इसकी प्रारंभिक डीपीआर शासन को भेजी जा चुकी है। सचिव आवास एवं राज्य सम्पत्ति डॉ आर राजेश कुमार ने रामपुर रोड स्थित प्रस्तावित ट्रांसपोर्ट नगर परियोजना का भी स्थलीय निरीक्षण किया। अधिकारियों के अनुसार 48 एकड़ क्षेत्रफल में विकसित होने वाली इस महत्वाकांक्षी परियोजना की 72 करोड़ रुपये की प्रारंभिक डीपीआर शासन को प्रेषित की गई है। सचिव ने कहा कि ट्रांसपोर्ट नगर बनने से परिवहन व्यवसाय से जुड़े लोगों को एक ही स्थान पर सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध होंगी, जिससे क्षेत्रीय व्यापार और आर्थिक गतिविधियों को नई गति मिलेगी।

इसके उपरांत उन्होंने त्रिशूल चौक से मेडिकल कॉलेज तक प्रस्तावित सड़क चौड़ीकरण कार्य तथा कलेक्ट्रेट परिसर में निर्माणाधीन विकास प्राधिकरण कार्यालय का निरीक्षण कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उपाध्यक्ष जिला विकास प्राधिकरण जय किशन, मुख्य विकास अधिकारी दिवेश शाशनी, सचिव जिला विकास प्राधिकरण पंकज उपाध्याय, नगर आयुक्त शिप्रा जोशी, अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग गजेंद्र सिंह सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

सचिव आवास एवं राज्य सम्पत्ति डॉ. आर. राजेश कुमार का बयान

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में राज्य सरकार आम नागरिकों को बेहतर आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। बागवाला में प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत निर्मित 1872 आवास लगभग तैयार हैं और हमारी प्राथमिकता है कि पात्र लाभार्थियों को जल्द से जल्द इनका लाभ मिले। सभी परियोजनाओं में गुणवत्ता, पारदर्शिता और समयबद्धता सुनिश्चित की जा रही है। साथ ही भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री आवास योजना 2.0, ट्रांसपोर्ट नगर और कुमाऊं कॉमर्शियल कुटीर जैसी महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर भी तेजी से कार्य किया जा रहा है, जिससे क्षेत्र के समग्र शहरी विकास को नई दिशा मिलेगी।

मंत्री हो या संत्री... अब सबको कटवानी पड़ेगी बाबा की पर्ची

-1100 रुपये के 'सुगम दर्शन' से भरेगा बीकेटीसी का खजाना

देहरादून । बाबा केदार की पावन नगरी में अब दर्शन व्यवस्था पूरी तरह बदलने जा रही है। विश्व प्रसिद्ध केदारनाथ धाम में बढ़ती भीड़, वीआईपी कल्चर और अव्यवस्थित दर्शन व्यवस्था के बीच बदरी-केदार मंदिर समिति (बीकेटीसी) ने बड़ा फैसला लेते हुए नई एसओपी जारी कर दी है। नई व्यवस्था के तहत अब 'सुगम दर्शन' के लिए श्रद्धालुओं को 1100 रुपये शुल्क देना होगा। इस फैसले के बाद धाम में एक नई बहस छिड़ गई है। चर्चा इस बात की है कि अब बाबा के दरबार में मंत्री हो या संत्री, आम श्रद्धालु हो या खास व्यक्ति सभी को नियमों के तहत 'पर्ची' कटवानी पड़ेगी। मुख्य कार्याधिकारी सोहन सिंह रांगड़ ने बताया कि यह व्यवस्था यात्रा संचालन को अधिक सुव्यवस्थित, सुरक्षित और समयबद्ध बनाने के उद्देश्य से लागू की गई है। लगातार बढ़ रही श्रद्धालुओं की संख्या, खराब मौसम और लंबी कतारों की समस्या को देखते हुए यह कदम उठाया गया है।

नई एसओपी के अनुसार अब श्रद्धालुओं को निर्धारित शुल्क देकर तय समय में सुगम दर्शन की सुविधा दी जाएगी। इससे घंटों लाइन में लगने की समस्या कम होगी और विशेष रूप से बुजुर्गों, महिलाओं एवं अस्वस्थ यात्रियों को राहत मिल सकेगी। लेकिन सबसे बड़ी चर्चा इस बात को लेकर है कि इस नई व्यवस्था का असर अब पंडा-पुरोहितों और उनके यजमानों पर भी पड़ने जा रहा है। वर्षों से चली आ रही परंपरागत व्यवस्थाओं के बीच अब यजमानों के लिए भी प्रक्रिया के तहत पर्ची कटवाना अनिवार्य बताया जा रहा है। इसे बीकेटीसी द्वारा व्यवस्था पर 'कड़ा नियंत्रण' माना जा रहा है। धाम में यह चर्चा भी तेज है कि अब वीआईपी संस्कृति पर भी काफी हद तक रोक लगेगी। यानी सिफारिश, रसूख और दबाव की बजाय अब नियम और शुल्क आधारित व्यवस्था लागू होगी। हालांकि, इस फैसले पर प्रतिक्रियाएं भी दो हिस्सों में बंटती दिखाई दे रही हैं। कुछ श्रद्धालु इसे बेहतर प्रबंधन और सुरक्षित यात्रा की दिशा में बड़ा कदम मान रहे हैं, तो कुछ लोग इसे आस्था के नाम पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ बता रहे हैं। सोशल मीडिया पर भी इस एसओपी को लेकर बहस तेज हो गई है। इन दिनों बाबा केदार की नगरी में लगातार बारिश, बर्फीली हवाओं और भारी भीड़ के बीच यात्रा अपने चरम पर है। ऐसे में बीकेटीसी की यह नई व्यवस्था आने वाले दिनों में यात्रा संचालन की तस्वीर बदल सकती है। अब देखना यह होगा कि 'सुगम दर्शन' की यह नई व्यवस्था श्रद्धालुओं को राहत देती है या फिर नए विवादों को जन्म देती है। फिलहाल एक बात तय मानी जा रही है 'बाबा के दरबार में अब नियम सबसे ऊपर होंगे।' वर्षों से चली आ रही परंपरागत व्यवस्थाओं के बीच अब यजमानों के लिए भी प्रक्रिया के तहत पर्ची कटवाना अनिवार्य बताया जा रहा है।

हिंदी पत्रकारिता दिवस: रूप बदलती पत्रकारिता और चुनौती

-आर पी तोमर

कड़वी सच्चाई है कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में पहचाने जाने वाली पत्रकारिता का स्वरूप आज एक 'मिशन' से बदलकर पूरी तरह से व्यावसायिक और तकनीकी-उन्मुख हो गया है। इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के प्रसार ने मुद्रित और दृश्य-श्रव्य माध्यमों को डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर एकीकृत कर दिया है, जिससे पत्रकारिता अधिक तात्कालिक, बहुआयामी और डेटा-संचालित हो गई है। पत्रकारिता आज प्रिंट से डिजिटल और सोशल मीडिया की ओर मुड़ गई है। समाचार अब केवल सुबह के अखबारों तक सीमित नहीं हैं। ट्विटर, एक्स और फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म सबसे पहले खबरें पहुँचाने का मुख्य माध्यम बन गए हैं। इसके अलावा, यू ट्यूब और विभिन्न पॉडकास्ट ने दृश्य-श्रव्य पत्रकारिता का लोकतंत्रीकरण कर दिया है। स्मार्टफोन की उपलब्धता और इंटरनेट की पहुँच ने आम नागरिकों को भी पत्रकार बना दिया है। आज कोई भी व्यक्ति किसी घटना का सीधा वीडियो या फोटो सोशल मीडिया के माध्यम से दुनिया के सामने ला सकता है, जिससे पारंपरिक मीडिया की एकाधिकार वाली भूमिका कम हुई है। अब खबरों को केवल शब्दों में नहीं, बल्कि डाटा रेपर या टैब्लेऔ जैसे टूल्स के माध्यम से इन्फोग्राफिक्स, चार्ट और इंटरैक्टिव डेटा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। डिजिटल युग में 'क्लिकबेट', सनसनीखेज हेडलाइंस और फर्जी खबरों का चलन बढ़ा है। त्वरित समाचार देने की होड़ में कई बार तथ्यों के सत्यापन में कमी आती है। पारंपरिक पत्रकारिता 'वन-वे' (एकतरफा) थी, लेकिन डिजिटल पत्रकारिता 'टू-वे' (दोतरफा) हो गई है। वहीं आज अधिकांश मीडिया चेनलों व प्लेटफार्म पर पत्रकार की जगह एमबीए पास सेल्समैन को प्राथमिकता दी जाने लगी है। चाटुकारिता ने भी पत्रकारिता का

स्वरूप बदल दिया है। कुल मिलाकर, पत्रकारिता ने अपनी गति और पहुँच में विस्तार तो किया है, लेकिन पत्रकारिता में गिरावट भी आई है। इसके साथ ही विश्वसनीयता बनाए रखना और व्यावसायिक दबावों से बचना आज के पत्रकारों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

देश जानता है कि भारत में हिंदी पत्रकारिता की न केवल आजादी के संघर्ष में बल्कि उससे पूर्व के गुलामी की बेड़ियों में जकड़े राष्ट्र की संकटपूर्ण स्थितियों में महत्वपूर्ण भूमिका रही है, आज के नये भारत में यह भूमिका और भी अधिक अहम हो जाती है, क्योंकि तब से आज तक समाज की आवाज़ उठाने, सत्ता से सवाल पूछने और जनभावनाओं को मंच देने में इसका योगदान अविस्मरणीय रहा है। हिंदी पत्रकारिता या स्थानीय पत्रकारिता, लोगों को उनकी भाषा में जानकारी उन तक पहुँचाता है और देश भर में ज्ञान के व्यापक प्रसार को सुगम बनाता है। भारत में हर साल हम 30 मई को हिंदी पत्रकारिता दिवस मनाते है। विदित है कि दो शताब्दी पूर्व ब्रिटिशकालीन भारत में जब तत्कालीन हिन्दुस्तान में दूर-दूर तक मात्र अंग्रेजी, फ़ारसी, उर्दू एवं बांग्ला भाषा में अखबार छपते थे, तब देश की राजधानी 'कलकत्ता' से हिन्दी भाषा में 'उदन्त मार्तण्ड' के नाम से पहला हिन्दी समाचार पत्र वर्ष 1826 को छपा था। पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने इसे साप्ताहिक के तौर पर शुरू किया था। जो कुछ समय बाद ही बंद हो गया था, लेकिन इसने हिंदी पत्रकारिता के सूर्य को उदित कर दिया था जो आज भी देदीप्यमान है।

आज जब हिन्दी देश एवं दुनिया में सर्वाधिक बोली एवं प्रयोग की जाने वाली तीसरी भाषा बन चुकी है, ऐसे में सहज ही हिन्दी पत्रकारिता का मूल्य बढ़ा है। निस्संदेह, सजग, सतर्क और निर्भीक हिन्दी पत्रकार एवं पत्रकारिता एक सशक्त विपक्ष की भूमिका निभाकर सत्ताधीशों को राह ही दिखाता है। अकबर इलाहाबादी ने सटीक ही कहा था कि 'न खींचो कमान, न तलवार निकालो, जब तोप हो मुकाबिल तब अखबार निकालो।' उन्होंने इन पंक्तियों के जरिए हिन्दी पत्रकारिता को तोप और तलवार से भी शक्तिशाली बता कर इनके इस्तेमाल की बात कह दी थी। लेकिन आज खबरनवीसों की कलम को तोड़ने, उन्हें कमजोर करने एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को निस्तेज करने के लिए स्वार्थी ताकतें सत्ता, तलवार और तोप का इस्तेमाल कर रही हैं। परंतु आज भी सच्चे व निष्पक्ष पत्रकारों की वजह से बड़े-बड़े राजनेता, उद्योगपतियों और सितारों को अर्श से फर्श पर आना पड़ा है, ऐसे पत्रकारों की बदौलत ही लोकतंत्र के चौथे स्तंभ का मान बचा हुआ है।

मिशन से व्यवसाय बनती हिन्दी पत्रकारिता आज कई संकटों का सामना कर रही हैं- संघर्ष और हिंसा, आतंक एवं अलगाव, साम्प्रदायिकता एवं अंधधार्मिकता, युद्ध एवं राजनीतिक वर्चस्व, गरीबी एवं बेरोजगारी, लगातार सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ, पर्यावरणीय संकट और लोगों के स्वास्थ्य और भलाई के लिए चुनौतियाँ आदि जटिलतर स्थितियों के बीच हिन्दी पत्रकारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। लोकतंत्र, कानून के शासन और मानवाधिकारों को आधार देने वाली संस्थाओं पर गंभीर प्रभाव के कारण ही यह भूमिका महत्वपूर्ण है। बावजूद इसके हिन्दी पत्रकारिता की स्वतंत्रता, पत्रकारों की सुरक्षा और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर लगातार हमले हो रहे हैं। सत्ता विरोधी यानी सच्चाई लिखने वाले पत्रकारों का उत्पीड़न आम हो गया है। ऐसा करने वाले मीडिया को भी सत्ता के दलाल खरीद लेते हैं। आज के समय में पत्रकारों की जगह एमबीए सेल्समेनों को प्राथमिकता दी जाने लगी है। कभी-कभी तो भारत में हिन्दी पत्रकारिता की स्वतंत्रता पर सख्त पहरे जैसा भी प्रतीत होता है, जो दुर्भाग्यपूर्ण है। जबकि बड़ी सचाई है कि इन्हीं मिशनरी पत्रकारों के बल पर हमें आजादी मिली है। पत्रकारिता लोकहित में सरकार को कदम उठाने का रास्ता सुझाती रहती है, इसीलिए उसकी विश्वसनीयता होती है। मगर सरकारें जब उसके मूल स्वभाव को ही बदलने का प्रयास करती हैं, अपने स्वार्थ के लिए उसकी विश्वसनीयता पर प्रहार करती हैं। ऐसे में पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ न होकर प्रचारतंत्र में तब्दील होने लगती है। पत्रकारिता आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों को दूर करने में मदद करती है। उसका लाभ उठाने के बजाय अगर उसका गला घोटने का प्रयास होगा, तो सही अर्थों में विकास का दावा नहीं किया जा सकता, नया भारत-सशक्त भारत निर्मित नहीं किया जा सकता। अगर कोई सरकार सचमुच उदारवादी और लोकतांत्रिक होगी, तो वह आलोचना से कुछ सीखने का प्रयास करेगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी हिन्दी पत्रकारिता के प्रति हमारे अविश्वसनीय समर्थन को दोहराने की बात कही है जो लोकतंत्र के लिए बेहद जरूरी है।

हिन्दी पत्रकारिता आज़ादी के आंदोलन तक पूर्णरूप से मिशन था, आज कुछ लोगों के लिए व्यवसाय बन गया है। धीरे-धीरे व्यापारी व औद्योगिक घराने इस क्षेत्र में उतर गए। जिनका उद्देश्य समाज सेवा नही रहा, व्यापार हो गया। वे व्यावसायिक दृष्टिकोण को मद्देनजर रखकर ही, वह छापने लगे जिससे इन्हें लाभ हो। डिजिटल युग में टीआरपी और व्यूज़ ही सफलता का पैमाना बन गए हैं। गंभीर पत्रकारिता की जगह सनसनीखेज खबरें, गॉसिप और 'डिबेट तमाशों' ने ले ली है। तथ्य की जगह धारणा, विश्लेषण की जगह उत्तेजना और संवाद की जगह शोर ने कब्जा कर लिया है। एंकर शोर मचा -मचाकर, चीख-चीखकर पाठकों को आकर्षित करने में लगे हैं। डिबेटो को ऐसे दिखाया जाता है जैसे भारत के भाग्य का फैंसला इन्ही के हाथ मे हो और अभी निर्णय लिया जाने वाला है। हिन्दी पत्रकारिता ऐसी अनेक चुनौतियों एवं विसंगतियों का सामना कर रही है। बीते कुछ वर्षों में पत्रकारिता का स्तर चिंताजनक रूप से गिरा है, जबकि पत्रकारों की प्रसिद्धि, प्रभाव और पहुंच पहले से कहीं अधिक बढ़ी है। यह विरोधाभास क्यों? पत्रकार बड़े होते जा रहे हैं, पर पत्रकारिता एवं उसके मूल्य-मानक क्यों सिकुड़ रहे है? आज फेसबुक पत्रकार, न्यूज पोर्टल चलाने वाले पत्रकार, यूट्यूब चैनल चलाने वाले पत्रकारों की देश में बाढ़ सी आ गई है। टीवी पत्रकारिता का वर्चस्व बढ़ रहा है, बड़े एवं बहु-संस्करणों के दैनिक अखबार भी तेजी से बढ़ रहे हैं। आन लाइन समाचार पत्रों की रोज गिनती बढ़ती जा रही है। जिसे देखो पत्रकारिता कर रहा है। इतना सब होने के बावजूद पिछले कुछ साल में खबर एवं हिन्दी पत्रकारिता की विश्वसनीय घटी है। पत्रकारिता का स्तर गिरा है। पत्रकार का सम्मान घटा है।

पहले माना जाता कि अखबार में छपा है तो सही होगा, किंतु मीडिया में आई खबर की आज कोई गारंटी देने को तैयार नहीं। पहले हिन्दी पत्रकारिता वैचारिक-क्रांति होती थी, आज खबर प्रधान बन गयी है, विचार लुप्त है। हिन्दी पत्रकारिता दिवस मनाना तभी सार्थक होगा जब उसे व्यवसाय नहीं, मिशन के तौर पर नये व्यक्ति, नये समाज, नये राष्ट्र का प्रेरक बनायेंगे। साथ ही हमे खुद भी मंथन करना होगा कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की विश्वसनीयता कायम रखने और मिशनरी पत्रकारिता में हमारा कितना योगदान है? हम क्यों भटके हैं? क्यों हमारे ऊपर भी दाग लगा है? क्यों हम पत्रकार को पत्रकार और पत्रकारिता को पत्रकारिता बनाये रखने के मिशन से भटक रहे हैं? इस आत्ममंथन के लिए हिंदी पत्रकारिता का दिन सबसे उपयुक्त है।

चर और अचर जगत की जननी गंगा

-अशोक 'प्रवृद्ध'

ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को हस्त नक्षत्र के दिव्य योग में मनाया जाने वाला गंगा दशहरा मूलत: सनातन संस्कृति के जलीय पारिस्थितिकी, चेतना के ऊर्ध्वगमन तथा आध्यात्मिक शुद्धता का एक कालजयी विमर्श है। वैचारिक रूप से यह पर्व केवल एक नदी विशेष के धरातल पर प्रकट होने की ऐतिहासिक घटना नहीं है, अपितु यह ब्रह्मांडीय ऊर्जा के स्थूल जगत में अवतरण, मानवीय अहंकार के शमन और समष्टिगत कल्याण की उस शाश्वत सत्य परंपरा का निदर्शन है जिसे परम सत्य का भौतिक प्रकटीकरण कहा जाता है। भारतीय संस्कृति में नदियां केवल जल की वाहिकाएं नहीं हैं, अपितु वे साक्षात चिति शक्ति की प्रवाहमयी धाराएं हैं। इनमें भी भगवती गंगा का स्थान सर्वोपरि है। वेदों की ऋचाओं से लेकर उपनिषदों के गंभीर तत्त्वज्ञान और पुराणों के आख्यानों तक गंगा का स्वरूप व्यापक और बहुआयामी रहा है। ज्येष्ठ शुक्ल दशमी का दिन जिसे लोकमानस गंगा दशहरा के नाम से पूजता है, वह वास्तव में समष्टि चेतना का व्यष्टि धरातल पर अभिषेक है। वैदिक काल में गंगा का स्वरूप अत्यंत विराट और सूक्ष्म आध्यात्मिक शक्तियों से ओत-प्रोत था। ऋग्वेद के मंत्रद्रष्टा ऋषियों ने जल को आपो देवी कहकर संबोधित किया, जो जीवन का मूलाधार है। ऋग्वेद के 10वें मंडल के 75वें सूक्त (नदीसूक्त) में भारतवर्ष की प्रमुख सरिताओं का आवाहन किया गया है। यहां गंगा का नाम सादर उल्लिखित है। इस ऋचा में गंगा को केवल भौगोलिक सरिता के रूप में नहीं, वरन एक दिव्य मातृशक्ति के रूप में अग्रगण्य माना गया है। वैदिक मनीषियों के लिए गंगा का प्रवाह अंत:चेतना का प्रवाह था। ऋग्वेद में जल को विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्री:, अर्थात चर और अचर जगत की जननी कहा गया है, जो इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि वैदिक युग से ही गंगा के जल में दैवीय तत्त्वों का अनुसंधान प्रारंभ हो चुका था। अथर्ववेद में भी जल की शोधक क्षमता का विस्तृत वर्णन अंकित है। वहां कहा गया है कि दिव्य जल हमारे आंतरिक और बाह्य दोनों विकारों का शमन करता है। गंगा दशहरा का मूल सिद्धांत, दस प्रकार के पापों का शमन, इसी वैदिक जलीय शुद्धता के सिद्धांत से अनुप्राणित है। उपनिषदों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय ब्रह्मविद्या और आत्मज्ञान है। स्थूल आख्यानों से परे उपनिषद प्रतीकवाद का आश्रय लेते हैं। उपनिषदों की दृष्टि में गंगा सुषुम्णा नाड़ी और प्राण शक्ति की साक्षात संगीतमय अभिव्यक्ति हैं। उपनिषदों में वर्णित नाड़ी विज्ञान के अनुसार मानव शरीर के भीतर 72,000 नाड़ियां हैं, जिनमें इड़ा, पिंगला और सुषुम्णा मुख्य हैं। यौगिक दर्शन में गंगा को सुषुम्णा माना गया है, जो मूलाधार से उत्पन्न होकर सहस्रार की ओर गमन करती है। गंगावतरण का अर्थ है- परम आकाश (ब्रह्मलोक) से चेतना का अवतरण होकर रीढ़ की हड्डी के माध्यम से स्थूल शरीर में प्रवाहित होना। गंगा दशहरा वास्तव में उस यौगिक सिद्धि का उत्सव है, जब साधक अपनी सोई हुई ऊर्जा का पृथ्वी (मूलाधार) पर सृजनात्मक उपयोग करना सीखता है। कालांतर में पौराणिक काल में वैदिक प्रतीक सहज कथाओं का रूप ले लेते हैं ताकि जनसामान्य परम सत्य को आत्मसात कर सके। गंगा दशहरा के संदर्भ में पुराणों का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक योगदान अप्रतिम है। वराह पुराण के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को हस्त नक्षत्र में गंगा का पृथ्वी पर पदार्पण हुआ। इस तिथि को दशहरा इसलिए कहा जाता है, क्योंकि यह मानव के दस विशिष्ट पापों को समूल नष्ट करने की क्षमता रखती है।

बेटियों से दुष्कर्म और छेड़छाड़ का आरोपी पिता गिरफ्तार

हरिद्वार । पथरी थाना क्षेत्र में रिश्तों को शर्मसार कर देने वाला मामला सामने आया है। एक पिता पर अपनी नाबालिग बेटियों के साथ दुष्कर्म और छेड़छाड़ करने का आरोप लगा है। पीड़ित पत्नी और बेटी की शिकायत पर पुलिस ने मंगलवार को तत्काल मुकदमा दर्ज कर आरोपी पिता को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस के अनुसार पीड़िता महिला ने फेरूपुर चौकी पहुंचकर लिखित शिकायत दी कि उसका पति उनकी 15 वर्षीय बड़ी बेटी का शारीरिक शोषण कर रहा था। आरोप है कि आरोपी ने अब 14 वर्षीय छोटी बेटी के साथ भी छेड़छाड़ करते हुए जबरदस्ती करने का प्रयास किया। विरोध करने पर वह पत्नी और बच्चों के साथ मारपीट करता था और जान से मारने की धमकी देता था। थाना प्रभारी रविन्द्र कुमार के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम ने आरोपी को पकड़ने के लिए संभावित ठिकाने पर दबिश देनी शुरू की। मुकदमा दर्ज होने के चंद घंटों के भीतर ही मुखबिर की सटीक सूचना पर आरोपी को घिस्सुपुरा से पथरी जाने वाले सड़क मार्ग से गिरफ्तार कर लिया गया। पथरी थाना प्रभारी रविन्द्र कुमार ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी के विरुद्ध पोक्सो एक्ट में मुकदमा दर्ज कर माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया है। पुलिस टीम में फेरूपुर चौकी प्रभारी विपिन कुमार, महिला उपनिरीक्षक शाहिदा परवीन, कास्टेबुल अजीत तोमर व कांस्टेबल अनिल पंवार शामिल रहे।

हरिद्वार में नॉनवेज की ऑनलाइन डिलीवरी पर रोक की मांग

हरिद्वार । धर्मनगरी हरिद्वार में ऑनलाइन माध्यम से मांसाहारी खाद्य पदार्थों और नशीले सामानों की होम डिलीवरी पर रोक लगाने की मांग तेज हो गई है। मंगलवार को श्री अखंड परशुराम अखाड़े के कार्यकर्ताओं ने रोशनाबाद स्थित जिलाधिकारी मयूर दीक्षित कार्यालय पहुंचकर मुख्यमंत्री के नाम का ज्ञापन सौंपा। संतों ने हरिद्वार नगर निगम क्षेत्र में लागू 1916 के म्युनिसिपल बायलॉज का सख्ती से पालन कराने और ऑनलाइन कंपनियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई की मांग उठाई है। अखाड़े के अध्यक्ष अधीर कौशिक के नेतृत्व में दिए गए ज्ञापन में कहा गया कि विभिन्न ऑनलाइन फूड डिलीवरी कंपनियों के माध्यम से नगर क्षेत्र में खुलेआम मांसाहारी खाद्य पदार्थों और अन्य नशीले सामानों की होम डिलीवरी की जा रही है। इससे हरिद्वार की धार्मिक एवं सांस्कृतिक गरिमा प्रभावित हो रही है और संत समाज व श्रद्धालुओं की भावनाएं आहत हो रही हैं। ज्ञापन में ऑनलाइन कंपनी को नगर निगम द्वारा दिए गए नोटिस को नाकाफी बताते हुए कड़ी कार्रवाई की मांग की गई। अधीर कौशिक ने कहा कि यदि आश्रमों, घाटों और धार्मिक स्थलों तक मांसाहारी सामग्री की डिलीवरी जारी रही तो इससे धर्मनगरी की पवित्र छवि प्रभावित होगी। संत कार्तिक गिरी ने प्रशासन से नियमों का उल्लंघन करने वाली कंपनियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की।

सुराज सेवा दल ने निगम भूमि प्रकरण में अधिकारियों को बचाने का आरोप लगाया

हरिद्वार । हरिद्वार नगर निगम के भूमि प्रकरण की जांच को लेकर एक बार फिर विवाद खड़ा हो गया है। मंगलवार को हरिद्वार प्रेस क्लब में आयोजित प्रेस वार्ता में सुराज सेवा दल ने जांच प्रक्रिया पर गंभीर सवाल उठाते हुए आरोप लगाया कि मामले में प्रभावशाली अधिकारियों और कर्मचारियों को बचाने का प्रयास किया जा रहा है। आरोप लगाया कि तत्कालीन तहसीलदार को कार्रवाई के बजाय पदोन्नति देकर उपजिलाधिकारी बनाने पर भी सवाल खड़े किए गए। संगठन ने निष्पक्ष कार्रवाई नहीं होने पर 23 मई को राजस्व परिषद पर विशाल धरना-प्रदर्शन की चेतावनी दी है। सुराज सेवा दल के प्रदेश अध्यक्ष रमेश जोशी ने कहा कि मई-जून 2025 में सामने आए नगर निगम हरिद्वार के भूमि प्रकरण ने पूरे प्रदेश को झकझोर दिया था। उन्होंने आरोप लगाया कि शासन द्वारा जांच अधिकारी बनाए गए रणवीर चौहान ने मिलीभगत कर मुख्य आरोपियों को बचाने का काम किया। जोशी ने आरोप लगाया कि एक लेखपाल इस पूरे मामले के प्रमुख लाभार्थियों में शामिल हैं। उनका दावा है कि विवादित भूमि लेखपाल और उनके परिजनों से जुड़ी थी और 143 के नोटिस पर उनके हस्ताक्षर भी मौजूद हैं।

ऊर्जा निगम ने पिटकुल के अनुसार बिजली कटौती की

हरिद्वार । पॉवर ट्रांसमिशन कॉरपोरेशन उत्तराखंड लिमिटेड के एसडीओ पंकज कुमार ने बताया कि सोमवार को ऊर्जा निगम ने मरम्मत काम के लिए बिजली की कटौती की थी। पिटकुल की ग्रिड दो बार केवल आधे घंटे के लिए फेल हुई। आधे घंटे बाद बिजली की आपूर्ति सुचारू कर दी गई। इसके बाद कोई बिजली की कटौती पिटकुल स्तर से नहीं हुई। मंगलवार को एसडीओ पंकज ने बताया कि ऊर्जा निगम बिजली के मरम्मत काम के लिए सप्लाई बंद करता है। सोमवार को ऊर्जा निगम स्तर से बिजली की कटौती की गई। हालांकि दिन में आधे घंटे के भीतर दो दफा ग्रिड फेल हुई थी, लेकिन तत्काल ग्रिड को रिस्टोर कर बिजली की आपूर्ति सुचारू कर दी गई थी। बता दें कि सोमवार को पिटकुल की 132 केवी भूपतवाला ग्रिड दो दफा फेल होने के बाद शहर से देहात तक दिन में साढ़े चार घंटे बिजली की सप्लाई बाधित रही थी। बिजली कटौती के दौरान करीब 400 उद्योगों में एक दिन का 36 फीसदी तक उत्पादन घट गया था। साथ ही करीब तीन लाख की आबादी को अघोषित बिजली कटौती से जूझना पड़ा था। बाजारों में व्यापारियों पर पानी बिजली की किल्लत बन गई थी। वहीं मंगलवार को औद्योगिक क्षेत्र और रिहायशी इलाकों में बिजली की आपूर्ति सुचारू होने से लोगों को राहत रही।

खंडूरी का निधन उत्तराखंड और देश के लिए एक अपूरणीय क्षतिः महेंद्र भट्ट

भाजपा परिवार ने शोक संतप्त परिजनों के प्रति गहरी संवेदनाएं वयक्त की!
राजनीति में ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और शुचिता एक महान युग का अंतः भट्ट
देवभूमि अपने जनरल को कभी भूल नहीं सकती, उनका योगदान हमेशा प्रेरणा देता रहेगा!

देहरादून । भाजपा ने उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री, पूर्व केंद्रीय मंत्री और वरिष्ठ भाजपा नेता मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) भुवन चंद्र खंडूरी के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। प्रदेश अध्यक्ष श्री महेंद्र भट्ट ने इसे राजनीति और सार्वजनिक जीवन विशेषकर पार्टी के लिए एक अपूरणीय क्षति बताया है। उन्होंने कहा, शुचिता, पारदर्शिता और कड़े फैसलों से दिवंगत खंडूरी जी ने उत्तराखंड के विकास को एक नई दिशा दी।

मीडिया में जारी अपने शोक संदेश में उन्होंने कहा कि आज हमने देश और राज्य के एक सच्चे नीतिवान, मार्गदर्शक और स्वच्छ राजनीति का प्रणेता को खो दिया है। कहा, खंडूरी जी का पूरा जीवन देश और उत्तराखंड की सेवा में समर्पित रहा। सेना में रहते हुए उन्होंने मां भारती की रक्षा की, और राजनीति में कदम रखने के बाद उन्होंने शुचिता, पारदर्शिता और कड़े फैसलों से पहले बतौर केंद्रीय मंत्री, फिर बतौर सीएम देश और उत्तराखंड के विकास को एक नई दिशा दी। मुख्यमंत्री के रूप में उनका कार्यकाल भ्रष्टाचार के खिलाफ कड़े रुख और प्रशासनिक सुधारों के लिए हमेशा याद रखा जाएगा। उनका जाना मेरे व्यक्तिगत और पार्टी के प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए एक अभिभावक को खोने जैसा है।

प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि खंडूरी जी ने पूर्व पीएम बाजपेई के नेतृत्व में स्वर्णिम चतुर्भुज योजना से देश को जोड़ने का ऐतिहासिक कार्य किया है। इसी तरह अपने मुख्यमंत्री काल में बुनियादी ढांचे, सड़कों के विकास और पारदर्शी शासन की जो मजबूत नींव उन्होंने रखी थी, उसी का परिणाम है कि आज उत्तराखंड विकास पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। उनका अनुशासित जीवन, जनता के प्रति उनकी जवाबदेही और उनकी सादगी आने वाली पीढ़ियों के लिए हमेशा प्रेरणा का केंद्र बनी रहेगी।

उन्होंने कहा, भाजपा परिवार की तरफ से इस दुःख की घड़ी में शोक संतप्त परिजनों के साथ से मजबूती से खड़ा है। साथ ही ईश्वर से दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने और उनके परिजनों व समर्थकों को इस असीम कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

डीएम ने पांच दिन में सड़क निर्माण पूरा करने के निर्देश दिए

हरिद्वार । चारधाम यात्रा और आगामी कांवड़ मेले की तैयारियों के बीच हरिद्वार में चल रहे सीवरेज और सड़क निर्माण कार्यों की धीमी रफ्तार पर जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने कड़ा रुख अपनाया है। मंगलवार को डीएम ने पुराना आरटीओ चौक और भारत माता मंदिर मार्ग क्षेत्र का स्थलीय निरीक्षण कर निर्माण कार्यों की प्रगति का जायजा लिया। इस दौरान सड़कों के किनारे फैले मलबे और निर्माण सामग्री को देखकर उन्होंने संबंधित अधिकारियों और ठेकेदारों को जमकर फटकार लगाई। साथ ही चेतावनी दी कि यदि पांच दिन के भीतर कार्य पूरा नहीं हुआ तो संबंधित ठेकेदारों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

एक बूथ पर पांच यूथ के मंत्र के साथ कांग्रेस को मजबूत करने का आह्वान

हरिद्वार । हरिद्वार ग्रामीण की युवा कांग्रेस की कार्यकारिणी की बैठक रानीपुर विधानसभा अध्यक्ष सौरभ सैनी के नेतृत्व में ज्वालापुर में सोमवार देर शाम संपन्न हुई। बैठक में युवा कांग्रेस के विस्तार, युवाओं की भागीदारी बढ़ाने, आगामी राजनीतिक कार्यक्रमों और जनहित के मुद्दों को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष विशाल भोजक ने कहा कि युवा कांग्रेस प्रदेश के युवाओं की आवाज बनकर लगातार संघर्ष कर रही है। उन्होंने कहा कि बेरोजगारी, महंगाई, शिक्षा और नीट जैसे पेपर लीक जैसी समस्याओं से आज का युवावर्ग परेशान है, ऐसे में युवा कांग्रेस युवाओं के अधिकारों की लड़ाई मजबूती के साथ लड़ेगी। प्रदेश प्रभारी सुरभी द्विवेदी ने कार्यकर्ताओं के उत्साह की सराहना करते हुए कहा कि युवा कांग्रेस तेजी से मजबूत हो रही है। उन्होंने पदाधिकारियों से जनसमस्याओं को प्राथमिकता के साथ उठाने और आमजन के बीच सक्रिय रहने की अपील की। उन्होंने 1 बूथ और 5 यूथ का मंत्र युवा कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को देते हुए कहा कि यूथ कांग्रेस के प्रत्येक कार्यकर्ता को घर-घर तक अपनी पकड़ बनानी है। जिला कांग्रेस अध्यक्ष बालेश्वर सिंह ने कहा कि कांग्रेस पार्टी हमेशा युवाओं को आगे बढ़ाने का कार्य करती रही है। पूर्व जिलाध्यक्ष राजीव चौधरी और तेलूराम प्रधान ने कहा कि युवा ही देश का भविष्य है, उन्होंने कहा कि जिस और जवानी चलती है उस और जमाना चलता है

ऋषिकुल पंजीकरण केंद्र में डीएम ने श्रद्धालुओं से जाना व्यवस्थाओं का हाल

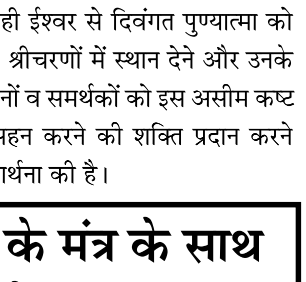

हरिद्वार । चारधाम यात्रा के बढ़ते दबाव के बीच जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने मंगलवार को ऋषिकुल मैदान स्थित ऑफलाइन पंजीकरण केंद्र का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने पंजीकरण कराने पहुंचे श्रद्धालुओं से सीधे संवाद कर पेयजल, स्वास्थ्य सेवाएं, हेल्प डेस्क और अन्य मूलभूत सुविधाओं की जानकारी ली। डीएम ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो और केंद्र पर सभी व्यवस्थाएं पूरी तरह सुचारु एवं चाक-चौबंद रखी जाएं। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि चारधाम यात्रा फिलहाल अपने चरम पर है और मुख्यमंत्री के निर्देशन में श्रद्धालुओं की सुविधा तथा सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि पंजीकरण केंद्र पर हर समय पर्याप्त संसाधन और कर्मचारी उपलब्ध रहें, ताकि तीर्थयात्रियों को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। डीएम ने केंद्र पर पेयजल, शौचालय, स्वास्थ्य सेवाएं और सूचना सहायता केंद्र की व्यवस्थाओं का बारीकी से निरीक्षण किया। साथ ही उपलब्ध सुविधाओं की गुणवत्ता का आकलन कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि हरिद्वार पहुंचने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर और सुगम अनुभव उपलब्ध कराना प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी है। इस अवसर पर जिला पर्यटन अधिकारी सुशील नौटियाल ने बताया कि अब तक ऑनलाइन माध्यम से 37 लाख 28 हजार 571 श्रद्धालु चारधाम यात्रा के लिए पंजीकरण करा चुके हैं। वहीं ऋषिकुल मैदान स्थित ऑफलाइन पंजीकरण केंद्र पर अब तक 1 लाख 94 हजार 172 श्रद्धालुओं का पंजीकरण किया जा चुका है।

व्हाइट प्लीटेड फ्लैप पैंटसूट में क्वीन ऑफ कान्स ऐश्वर्या राय का ग्लैमरस अवतार

कान्स फिल्म फेस्टिवल 2026 के लिए ऐश्वर्या राय बच्चन ने रेड-कार्पेट पर बिल्कुल अलग-अलग अंदाज में नजर आई. ऐश्वर्या राय बच्चन ने अपने सबसे बोल्ड फैशन मोमेंट्स में से एक को फिनाले के लिए बचाकर रखा था. जब मशहूर कान्स फिल्म फ़ेस्टिवल 2026 का समापन हुआ, तो बॉलीवुड की इस आइकॉन ने रेड कार्पेट पर एक बेहद शानदार लुक में एंट्री की, जिसने पूरे इंटरनेट को अपना दीवाना बना दिया.

कान्स के फाइनल में ऐश्वर्या राय बच्चन एक क्लासिक सफेद टक्सीडो पहनाना चाहती थीं, जिसमें एक्ट्रेस के कुछ सबसे यादगार ऑन-स्क्रीन लुक्स की झलक हो. इस इंटरनेशनल कान्स फिल्म फेस्टिवल के 79वें संस्करण की समापन सेरेमनी के लिए, क्वीन ऑफ कान्स ने सबसे स्टाइलिश सफेद लुक चुना, एक लेयर्ड टक्सीडो जिसमें पंखों की डिटेलिंग थी, एक फ़ेदर बोआ.

हालांकि ऐश्वर्या ने कान्स रेड कार्पेट पर कई बार सफेद रंग के आउटफिट पहने हैं, लेकिन यह टक्सीडो अब तक के उनके सबसे बेहतरीन लुक्स में से एक है. यह आउटफिट चीनी डिजाइनर चेनी चान ने खास तौर पर डिजाइन किया है, और इसकी स्टाइलिंग भारतीय सेलिब्रिटी स्टाइलिस्ट मोहित राय और उनकी टीम ने की है. इंस्टाग्राम पेज बॉलीवुड वीमेन क्लोसेट के अनुसार, उनके गहने यूके स्थित हसनजादेह ज्वेलरी के हैं.

एक्ट्रेस ने एक बेहद स्टाइलिश सफेद ब्लेजर पहना था, जिस पर चारों ओर चमकते हुए सेक्विन का काम किया गया था. इसकी बनावट को उभरे हुए कंधों, परतदार नॉच लैपल्स और लेस की कारीगरी से और भी ज्यादा शानदार बना दिया गया था. कमर पर फिटिंग वाली बनावट ने उनकी काया को बेहद खूबसूरती से तराशा, वहीं क्रिस्टल जड़े हुए सामने के क्लोजर ने इस स्ट्रक्चर्ड जैकेट को एक गहने जैसा आकर्षक रूप दिया. इसके नीचे, ऐश्वर्या ने ब्लेजर के साथ एक मैचिंग सफेद बस्टियर पहना था, जिस पर लेस की कढ़ाई की गई थी और जो ब्लेजर के नीचे से हल्की-हल्की झलक रही थी.

अपने सिग्नेचर ब्राउन वेवी बालों को खुला छोड़कर, ऐश्वर्या ने अपने लुक को सटल और एलिगेंट मेकअप के साथ पूरा किया. कान्स के प्रतिष्ठित रेड स्टेप्स पर चलते हुए ली गई इस तस्वीर में वह आत्मविश्वास और गरिमा से भरपूर नजर आ रही है.

एक मीडिया से बात करते हुए, चेनी ने ऐश्वर्या के इस खास लुक के पीछे की अपनी सोच बताई और कहा, मेरे लिए, सफेद रंग उन सबसे दमदार रंगों में से एक है जो मैंने उन पर (ऐश्वर्या पर) देखे हैं. यह रंग मुझे उनकी फिल्मों ताल, मोहब्बतें और देवदास के उनके मशहूर लुक्स की याद दिलाता है.

कृति सेनन ने सिनेमा की दुनिया में पूरे किए 12 साल, बयां की दिल की बात

बॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री कृति सेनन ने अभिनय की दुनिया में 12 साल पूरे कर लिए हैं। इस खास मौके पर कृति ने सोशल मीडिया के जरिए अपनी खुशी जाहिर की। कृति ने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर एक तस्वीर पोस्ट की, जिसमें उनके अब तक के करियर के सभी यादगार और मशहूर किरदारों का कोलाज शामिल है। अभिनेत्री ने खुशी जाहिर करते हुए लिखा, वाह! फिल्मों की इस जादुई दुनिया में कदम रखे हुए मुझे 12 साल हो गए हैं। कृति ने साल 2014 में आई फिल्म हीरोपंती से बॉलीवुड में कदम रखा था। इस फिल्म में उनके साथ अभिनेता टाइगर श्रॉफ ने भी अपने करियर की शुरुआत की थी। पहली ही फिल्म से कृति ने अपनी एक्टिंग से दर्शकों का दिल जीत लिया था। इसके बाद उन्होंने बरेली की बर्फी, लुका छुपी, दिलवाले, मिमी और क्रू जैसी कई सुपरहिट और बेहतरीन फिल्मों में काम किया। फिल्म मिमी में सरोगेट मां के किरदार ने उनके करियर को नई ऊंचाई दी। इस भूमिका के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से भी नवाजा जा चुका है। अभिनेत्री ने अपने करियर में हर तरह के किरदार निभाए हैं। अभिनेत्री जल्द ही बहुचर्चित रोमांटिक-कॉमेडी फिल्म कॉकटेल 2 में नजर आएंगी। होमी अदजानिया के निर्देशन में बन रही इस फिल्म में कृति के साथ शाहिद कपूर और रश्मिका मंदाना भी मुख्य भूमिकाओं में हैं। फिल्म में कृति सेनन अपने अब तक के सबसे बोल्ड और ग्लैमरस अवतार में नजर आएंगी। ऐसी भी चर्चा है कि कृति और रश्मिका इस फिल्म में ग्रे शेड्स वाले किरदार निभाती दिख सकती हैं। फिल्म की कहानी प्यार, दोस्ती और उलझे हुए रिश्तों के इर्द-गिर्द घूमती है। फिल्म का नया गाना माशूका पहले ही रिलीज हो चुका है, जिसमें शाहिद कपूर और कृति सेनन के बीच की शानदार केमिस्ट्री दर्शकों को काफी पसंद आ रही है। यह फिल्म 19 जून 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

दृश्यम 3 का दुनियाभर में धमाका, मोहनलाल की फिल्म ने 3 दिन में क्रॉस किया 100 करोड़ का आंकड़ा

दृश्यम 3 ने रिलीज के साथ ही बॉक्स ऑफिस पर कब्जा कर लिया है. 3 दिन में ही फिल्म ने 100 करोड़ क्लब में एंट्री ली. दृश्यम मोहनलाल की सुपरहिट फ्रेंचाइजी है. पहले दो पार्ट्स को फैंस ने जबरदस्त प्यार दिया था और अब तीसरा पार्ट भी बॉक्स ऑफिस पर धूम मचा रहा है. आइए नजर डालते हैं फिल्म के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन पर.

सैकनिल्क के मुताबिक, फिल्म ने घरेलू बॉक्स ऑफिस पर तीसरे दिन 13.70 करोड़ का कलेक्शन किया. फिल्म को 5,185 शोज मिले और 50.2 परसेंट ऑक्यूपेंसी रही. फिल्म के तीसरे दिन के कलेक्शन के आंकड़े अभी ऑफिशियली सामने नहीं आए हैं पर फिल्म ने अगर तीसरे दिन 13.70 करोड़ की कमाई की है तो फिल्म का अभी तक का टोटल 40.60 करोड़ हो गया है.

फिल्म ने पहले दिन 15.85 करोड़ कमाए थे. वहीं दूसरे दिन 11.05 करोड़ का बिजनेस किया था. बता दें कि फिल्म हिंदी भाषा में रिलीज नहीं हुई है. फिल्म ने तीसरे दिन मलयामल में 11.65 करोड़, कन्नड़ में 25 लाख, तमिल में 60 लाख और तेलुगू में 1.20 करोड़ कमाए.

वहीं फिल्म के वर्ल्डवाइड कलेक्शन पर नडर डालें तो तीसरे दिन दृश्यम 3 ने ओवरसीज मार्केट में 25 करोड़ की कमाई की. फिल्म ने तीन दिनों में टोटल 70 करोड़ का ओवरसीज कलेक्शन कर लिया है. वहीं टोटल वर्ल्डवाइड कलेक्शन की बात करें तो फिल्म ने 117.17 करोड़ का कलेक्शन कर लिया है. दृश्यम के पहले पार्ट की बात करें तो ये 2013 में रिलीज हुआ था. फिल्म को बहुत पसंद किया गया था. ये फिल्म हिट रही थी. दूसरा पार्ट 2021 में रिलीज हुआ था और इसे भी बहुत सराहा गया था. अब तीसरे पार्ट को भी बहुत अच्छे रिव्यूज मिले हैं. फिल्म में मोहनलाल लीड रोल में हैं. इसके अलावा फिल्म में मीना, अंसिबा जैसी एक्ट्रेसेस भी हैं. फिल्म को जीतू जोसेफ ने बनाया है.

रामचरण-जान्हवी कपूर की पेद्दी को सेंसर बोर्ड से मिली हरी झंडी; मिला यू/ए सर्टिफिकेट

रामचरण अपनी आगामी फिल्म पेद्दी को लेकर चर्चा में हैं। इसमें उनके साथ जान्हवी कपूर नजर आएंगी। फिल्म को सेंसर बोर्ड से हरी झंडी मिल गई है। सिनेमाघरों में दस्तक देने से पहले सीबीएफसी की तरफ से इसे यू/ए 16+ सर्टिफिकेट दिया गया है। सेंसर बोर्ड की तरफ से कराए गए कुछ एडिट के बाद फिल्म के रनटाइम का खुलासा हो गया है।

फिल्म पेद्दी बुच्ची बाबू सना द्वारा निर्देशित एक स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म है। सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन (सीबीएफसी) से यू/ए 16+ सर्टिफिकेट मिला है। निर्माताओं के अनुसार, पेद्दी का फाइनल रनटाइम 189 मिनट है यानी यह फिल्म तीन घंटे और 9 मिनट लंबी होगी। कथित तौर पर, सर्टिफिकेशन से जुड़ी जानकारी जारी की गई थी।

सर्टिफिकेशन प्रोसेस के तहत सीबीएफसी ने फिल्म में कुछ बदलावों का सुझाव दिया। यह फिल्म ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित है। इसमें कुछ गाली-गलौज वाले शब्द थे, जिन्हें सेंसर के सुझाव पर म्यूट किया गया है। चिकिरी चिकिरी गाने के कुछ द्विअर्थी बोलों को बदलने का आदेश सेंसर बोर्ड की तरफ से दिया गया है। फिल्म की यूनिट की तरफ से इसके लिए सहमति दे दी गई है। इसके अलावा फिल्म से राजस्थान शब्द और एक समुदाय का जिक्र हटाया गया है। इन सभी बदलावों के बाद फिल्म की अवधि तीन घंटे 9 मिनट है। फिल्म पेद्दी में रामचरण लीड रोल अदा कर रहे हैं। वहीं, जान्हवी कपूर अचियम्मा के किरदार में नजर आएंगी। फिल्म में शिवा राजकुमार, जगपति बाबू, बोमन ईरानी और दिव्येंदु भी अहम भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म 04 जून को सिनेमाघरों में दस्तक देगी।

फ्रिज में प्लास्टिक और कांच की बोतल में से किसमें पानी रखना होता है बेहतर?

पानी को स्टोर करने के लिए प्लास्टिक और कांच की बोतल, दोनों का इस्तेमाल किया जा सकता है। हालांकि, जब बात फ्रिज में पानी स्टोर करने की आती है तो इस पर काफी चर्चा होती रहती है। कुछ लोग कहते हैं कि प्लास्टिक की बोतल में पानी रखना हानिकारक है, वहीं कुछ लोग कांच की बोतल को बेहतर मानते हैं। आइए जानते हैं कि फ्रिज में पानी स्टोर करने के लिए कौन-सी बोतल का इस्तेमाल करना चाहिए।

प्लास्टिक की बोतल में पानी स्टोर करना सुरक्षित है?

प्लास्टिक की बोतल में पानी स्टोर करना सुरक्षित है या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस तरह की प्लास्टिक का इस्तेमाल कर रहे हैं। अगर आप बिना हानिकारक रसायनों वाली प्लास्टिक का इस्तेमाल कर रहे हैं तो यह सुरक्षित है। हालांकि, सस्ती और घटिया गुणवत्ता की प्लास्टिक में नुकसानदायक रसायन होते हैं, जो पानी में मिल सकते हैं और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं।

कांच की बोतल का चयन करना

कांच की बोतल एक अच्छा विकल्प हो सकता है, क्योंकि यह बिना किसी हानिकारक रसायन के होती है। इसके अलावा कांच की बोतलें लंबे समय तक चलती हैं और इनमें रखा पानी ताजा भी लगता है। हालांकि, कांच की बोतलें भारी होती हैं और टूटने का खतरा अधिक होता है, इसलिए इन्हें संभालते समय सावधानी बरतें। इसके साथ ही इन्हें धोकर साफ रखना भी जरूरी है, ताकि इनमें बैक्टीरिया न पनप सकें।

प्लास्टिक बनाम कांच: कौन-सी बोतल है बेहतर?

अब सवाल यह है कि प्लास्टिक और कांच में से कौन-सी बोतल बेहतर है? इसका जवाब देना मुश्किल है, क्योंकि दोनों के अपने-अपने फायदे और नुकसान हैं। अगर आप लंबे समय तक चलने वाला समाधान चाहते हैं तो कांच की बोतल बेहतर है, लेकिन अगर आप यात्रा के दौरान या ऑफिस में आसानी से इस्तेमाल करना चाहते हैं तो प्लास्टिक एक अच्छा विकल्प है। सबसे जरूरी है कि आप हमेशा बिना हानिकारक रसायनों वाली प्लास्टिक का ही चयन करें।

स्वास्थ्य पर प्रभाव

प्लास्टिक की बोतल में मौजूद कुछ रसायन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं। ये रसायन पानी में मिल सकते हैं और शरीर में जाकर कई समस्याएं पैदा कर सकते हैं। इसके विपरीत कांच की बोतलें पूरी तरह से सुरक्षित होती हैं और इनमें रखे पानी का स्वाद भी प्रभावित नहीं होता। इसलिए, स्वास्थ्य के लिहाज से कांच की बोतल अधिक सुरक्षित मानी जाती है। प्लास्टिक की बोतलों में प्लास्टिक के महीन कण भी घुल जाते हैं।

पर्यावरणीय प्रभाव

प्लास्टिक की बोतलों का इस्तेमाल पर्यावरण के लिए हानिकारक होता है, क्योंकि ये आसानी से नष्ट नहीं होतीं और जमीन पर कई साल तक पड़ी रहती हैं। इससे प्रदूषण बढ़ता है और जलीय जीव-जंतु भी प्रभावित होते हैं। दूसरी ओर कांच की बोतलें दोबारा इस्तेमाल की जा सकती हैं और इन्हें लंबे समय तक चलाया जा सकता है। इसलिए, पर्यावरण के लिए कांच की बोतलें बेहतर विकल्प साबित होती हैं।

खाने को धीरे-धीरे क्यों खाना चाहिए? जानिए इसका महत्व

खाना खाने का तरीका सिर्फ स्वाद और खुशबू तक सीमित नहीं है। यह हमारे सेहत और मानसिक संतुलन पर भी बहुत बड़ा असर डालता है। आजकल की तेज जीवनशैली में हम अक्सर जल्दी में खाना खाते हैं, जिससे पाचन तंत्र पर काफी बुरा असर पड़ता है। इस लेख में हम जानेंगे कि सभी को खाने को धीरे-धीरे क्यों खाना चाहिए और इससे हमें क्या-क्या फायदे मिल सकते हैं।

पाचन के लिए है फायदेमंद- धीरे-धीरे खाने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इससे पाचन तंत्र पर अच्छा असर पड़ता है। जब हम धीरे-धीरे खाते हैं, तो हमारे मुंह में लार सही तरीके से बनती है और भोजन का सही पाचन होता है। इससे खाना आसानी से पचता है और पेट में गैस या जलन जैसी समस्याएं कम होती हैं। इसके अलावा यह तरीका खाने के पोषक तत्वों को बेहतर तरीके से शरीर में मिलने में भी मदद करता है।

मानसिक संतुलन बनाए रखने में है मददगार- धीरे-धीरे खाना खाने से हमारा मानसिक संतुलन भी बेहतर होता है। जब हम आराम से बैठकर खाना खाते हैं, तो हमारा दिमाग शांत रहता है और तनाव कम होता है। यह तरीका हमें अपने भोजन पर ध्यान केंद्रित करने और उसके स्वाद को पूरी तरह से महसूस करने का मौका देता है। इससे हमारा मन भी खुश रहता है और हम खाने का पूरा मजा ले पाते हैं।

भूख का सही अंदाजा लगाना है संभव- अक्सर लोग जल्दी में खाना खत्म करने की होड़ में रहते हैं, जिससे वे अपनी असली भूख का अंदाजा नहीं लगा पाते। धीरे-धीरे खाने से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि कब हमारा पेट भर गया है। इससे हम ज्यादा खाने से बच सकते हैं और हमारे शरीर का वजन संतुलित रहता है। यह तरीका न केवल सेहत के लिए अच्छा है, बल्कि हमें खाने का पूरा आनंद लेने का भी मौका देता है।

सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं- धीरे-धीरे खाना खाने का एक और अहम पहलू यह है कि इससे हमारे सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं। जब हम परिवार या दोस्तों के साथ बैठकर आराम से खाना खाते हैं, तो बातचीत करने का समय मिलता है। इससे रिश्ते भी मजबूत होते हैं और आपस में समझ-बूझ बढ़ती है। यह तरीका न केवल हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा है, बल्कि हमें एक-दूसरे के करीब लाने में भी मदद करता है।

सेहतमंद आदतें विकसित होती हैं

धीरे-धीरे खाने की आदत अपनाने से अन्य सेहतमंद आदतें भी विकसित होती हैं, जैसे कि नियमित व्यायाम करना, पर्याप्त पानी पीना, और संतुलित आहार लेना। जब हम अपने खाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम अन्य सेहतमंद आदतें भी अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं। इस प्रकार, खाने को धीरे-धीरे खाने की आदत न केवल हमारे पाचन तंत्र के लिए फायदेमंद होती है, बल्कि यह हमारे मानसिक संतुलन और सामाजिक संबंधों को भी मजबूत करती है।

राइस कुकर में सही तरीके से खाना पकाने के लिए अपनाएं ये 5 सरल सुझाव

राइस कुकर एक उपयोगी उपकरण है, जो चावल को सही तरीके से और जल्दी पकाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। अगर आप सोचते हैं कि राइस कुकर केवल चावल पकाने के लिए होता है तो आपको बता दें कि आप इससे पुलाव, खिचड़ी, दलिया, दाल और यहां तक कि केक भी बना सकते हैं। आइए आज हम आपको कुछ ऐसे सुझाव देते हैं, जिन्हें अपनाकर आप राइस कुकर में हर बार सही तरीके से खाना पका सकते हैं।

पानी का सही अनुपात रखें- राइस कुकर में खाना पकाने के लिए सही मात्रा में पानी का उपयोग करना बहुत जरूरी है। अगर आप चावल बना रहे हैं तो आमतौर पर एक कप चावल के लिए 2 कप पानी का उपयोग करना चाहिए। पुलाव या खिचड़ी के लिए भी इसी अनुपात का पालन करें। दाल और दलिया के लिए 1:3 का अनुपात सही रहता है। इससे आपका खाना न तो कच्चा रहेगा और न ही ज्यादा गीला होगा।

समय का ध्यान रखें- राइस कुकर में खाना पकाने का समय भी बहुत अहम होता है। आमतौर पर चावल पकाने में 20-25 मिनट लगते हैं, जबकि पुलाव और खिचड़ी को पकाने में 30-40 मिनट का समय लगता है। दाल और दलिया को पकाने में भी लगभग इसी समय की जरूरत होती है। अगर आप केक बना रहे हैं तो इसे 50-60 मिनट तक पकाएं। सही समय पर खाना पकाने से आपका खाना न तो अधपका होगा और न ही ज्यादा पका हुआ।

उपकरण को सही तरीके से भरें- राइस कुकर के बर्तन को सही तरीके से भरना भी जरूरी है। इसे ज्यादा भरने से खाना उबलकर बाहर आ सकता है, इसलिए इसे आधा या 3/4 तक ही भरें। इससे खाना अच्छे से पकेगा और बाहर नहीं आएगा। इसके अलावा राइस कुकर के अंदर रखी प्लेट को हमेशा हल्का-सा घुमाकर रखें, ताकि भाप निकल सके और खाना अच्छे से पक सके। इससे आपका खाना हर बार सही तरीके से बनेगा।

सब्जियों को पहले से तैयार करें- अगर आप पुलाव या खिचड़ी बना रहे हैं तो सब्जियों को पहले से काटकर तैयार कर लें। इससे खाना पकाने का समय कम होगा और आपका खाना लजीज बनेगा। सब्जियों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर राइस कुकर में डालें और फिर ऊपर से चावल डालें। इसके बाद जरूरी मसाले और पानी मिलाएं। इससे आपका पुलाव और खिचड़ी एकसार बनेगा और स्वादिष्ट भी लगेगा। इस तरह आप अपने राइस कुकर का सही उपयोग कर सकते हैं।

साफ-सफाई पर ध्यान दें- राइस कुकर की नियमित सफाई करना बहुत जरूरी है, ताकि इसमें कीटाणु न पनप सकें। इस्तेमाल करने के बाद इसे धोकर सुखाएं और समय-समय पर इसकी सफाई करें। इन सरल सुझावों की मदद से आप अपने राइस कुकर में हर बार बेहतरीन खाना बना सकते हैं। इनका पालन करके न केवल आपका खाना स्वादिष्ट बनेगा, बल्कि यह भी सुनिश्चित होगा कि आपका राइस कुकर लंबे समय तक सही तरीके से काम कर रहा है।

गर्मियों के लिए परफेक्ट हैं ये 5 फेस मिस्ट, जानिए बनाने का तरीका

गर्मी के कारण त्वचा पर काफी असर पड़ता है। ऐसे में त्वचा को ठंडक देने के लिए आप बाजार से फेस मिस्ट खरीद सकते हैं, लेकिन उनमें मौजूद अप्राकृतिक रंग और खुशबू त्वचा को नुकसान भी पहुंचा सकती है। आइए आज हम आपको कुछ ऐसे फेस मिस्ट बनाने का तरीका बताते हैं, जिन्हें आप घर पर कुछ ही मिनटों में बनाकर इस्तेमाल कर सकते हैं और उनसे आपकी त्वचा को ठंडक और नमी मिलेगी।

खीरे का फेस मिस्ट

खीरे का फेस मिस्ट बनाने के लिए सबसे पहले एक मिक्सर में खीरे को अच्छे से पीसें, फिर इस मिश्रण को एक स्प्रे बोतल में डालकर फ्रिज में रख दें। जब भी आपको लगे कि गर्मी से आपकी त्वचा काफी बेजान हो गई है, तो उस पर खीरे के फेस मिस्ट का छिड़काव करें। यह फेस मिस्ट त्वचा को पोषण देने के साथ उसे ठंडक भी देगा। खीरे के इस फेस मिस्ट से आपकी त्वचा को ताजगी मिलेगी।

गुलाब जल और नींबू का फेस मिस्ट

गुलाब जल और नींबू का फेस मिस्ट न केवल त्वचा को ताजगी देता है, बल्कि इसे नमी भी देता है। इसे बनाने के लिए एक स्प्रे बोतल में ताजे गुलाब जल के साथ नींबू का रस मिलाएं, फिर इस मिश्रण को अच्छे से हिलाएं और अपने चेहरे पर छिड़कें। यह फेस मिस्ट त्वचा को ठंडक देने के साथ इसे ताजगी भरा भी महसूस कराएगा। गुलाब जल और नींबू का यह मिस्ट आपकी त्वचा को तरोताजा बनाए रखेगा।

एलोवेरा और खीरे का फेस मिस्ट

एलोवेरा और खीरे का फेस मिस्ट आपकी त्वचा को ठंडक देने के साथ-साथ उसे नमी भी देता है। इसके लिए एक स्प्रे बोतल में ताजे एलोवेरा जेल के साथ खीरे का रस मिलाएं, फिर इस मिश्रण को अच्छे से हिलाएं और अपने चेहरे पर छिड़कें। यह फेस मिस्ट त्वचा को पोषण देने के साथ इसे ताजगी भरा भी महसूस कराएगा। एलोवेरा और खीरे का यह मिस्ट आपकी त्वचा को नमी देगा।

पुदीना और नारियल पानी का फेस मिस्ट

पुदीना और नारियल पानी का फेस मिस्ट गर्मियों के लिए एक बेहतरीन विकल्प है क्योंकि इसमें मौजूद पुदीने की ताजगी और नारियल पानी की ठंडक आपकी त्वचा को तरोताजा रखती है। इसे बनाने के लिए एक स्प्रे बोतल में ताजे पुदीने के पत्ते डालें, फिर उसमें नारियल पानी डालकर अच्छे से हिलाएं।

सिडकुल में स्मार्ट मीटर से बढ़ी बिजली की खपत, उद्यमियों ने जताई नाराजगी

हरिद्वार । सिडकुल क्षेत्र के कई उद्योगों में लगाए गए स्मार्ट मीटर उद्यमियों के लिए परेशानी का कारण बन रहे हैं। भारी उद्योगों में स्मार्ट मीटर के असंतुलित पावर फैक्टर के कारण बिजली की खपत बढ़ रही है। इससे उत्पादन लागत बढ़ने के साथ उद्योगों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। समस्या के समाधान के लिए बुधवार को उद्यमियों ने मुख्य अभियंता शेखर चंद्र त्रिपाठी के साथ बैठक की। इसमें स्मार्ट मीटर की तकनीकी खामियां, गलत रीडिंग और अत्यधिक बिजली बिलों की समस्या उठाई। लघु उद्योग भारती के प्रदेश महामंत्री रोहित भाटिया, प्रदेश उपाध्यक्ष आमित त्यागी, जिलाध्यक्ष मनोज पुंडीर महामंत्री निखिल गोयल के नेतृत्व में उद्यमियों ने बताया कि नए स्मार्ट मीटर से उद्योगों को आर्थिक क्षति का समाना करना पड़ रहा है। उत्पादन प्रभावित हो रहा हैं। समस्या सुनने के बाद सीई शेखर त्रिपाठी ने उद्यमियों को सकारात्मक आश्वासन दिया। उन्होंने उद्यमियों को स्मार्ट मीटर की समस्या उत्पन्न होने वाले उद्योगों की 10 दिनों में सूची उपलब्ध कराने को कहा। आश्वस्त किया कि सूची प्राप्त होते ही प्राथमिकता के आधार पर जांच कर समस्या का समाधान किया जाएगा। वहीं, बैठक में उपस्थित उद्यमियों ने समस्याओं का जल्द समाधान नहीं होने पर ऊर्जा निगम के खिलाफ आंदोलन की चेतावनी दी। बैठक में जिला उपाध्यक्ष विनय शर्मा, संयुक्त महामंत्री ललित चौहान, सदस्य अनित मिश्रा, अभय अग्रवाल, वाशू शर्मा, पुरुषोत्तम, पुनीत अरोड़ा, चमन आदि मौजूद रहे।

कैपेसिटर बैंक से समस्या का समाधान

सीई ने बताया कि स्मार्ट मीटर कैपेसिटर के कारण भारी मशीनों से उत्पादन करने वाले उद्योगों में समस्या बनती है। इस वजह से ऊर्जा की खपत बढ़ रही है। सभी प्रभावित उद्योगों में कर्मचारियों को ऊर्जा बचत का प्रशिक्षण दिया जाएगा। उद्योगों का निरीक्षण करने के निर्देश दिए गए है। बताया कि पूर्व में कई उद्योगों में कैपेसिटर बैंक लगाने के बाद ऊर्जा की खपत कम हुई है।

बैठक में उद्यमियों ने समस्या से अवगत कराया है। प्राथमिकता से उद्योगों की समस्या का समाधान किया जाएगा। करीब 80 फीसदी उद्योगों में स्मार्ट मीटर सुचारु काम कर रहे हैं। - शेखर चंद्र त्रिपाठी, मुख्य अभियंता

घर में घुसकर हमले का आरोप, गर्भवती महिला समेत चार घायल

हरिद्वार । हरिद्वार के पथरी थाना क्षेत्र स्थित पुरानी कुंडी गांव में शराब के नशे में घर में घुसकर गर्भवती महिला समेत परिवार के चार लोगों से मारपीट का मामला सामने आया है। आरोप है कि गर्भवती महिला को गंभीर चोट आने पर जिला महिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुरानी कुंडी निवासी ईश्वर सिंह ने पथरी थाना पुलिस को शिकायत देकर बताया कि 22 मई की रात मोनू शराब के नशे में उनके घर पहुंचा। आरोप है कि उसके हाथ में डंडा था और उसने घर पहुंचते ही गाली-गलौज करते हुए उनकी पत्नी सपना, भतीजी वंशिका और बहन कविता के साथ मारपीट की। उनकी पत्नी सपना गर्भवती हैं। पथरी थाना प्रभारी रविंद्र सिंह ने बताया कि आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पाकिस्तान से कथित करोड़ों के लेनदेन से जुड़ी युवती गिरफ्तार

हरिद्वार । रुड़की क्षेत्र से जम्मू कश्मीर पुलिस ने स्थानीय पुलिस की मदद से छापा मारकर एक युवती को कथित पाकिस्तान से करोड़ों के लेनदेन से जुड़े मामले में गिरफ्तार किया है। लंबी पूछताछ के बाद पुलिस ने ट्रांजिट रिमांड हासिल किया और उसे अपने साथ ले गई।

मिली जानकारी के अनुसार पिरान कलियर कोतवाली क्षेत्र के आसफनगर गांव में जम्मू-कश्मीर पुलिस पहुंची और छापेमारी करते हुए एक युवती को पाकिस्तान के जरिए करोड़ों रुपये के ट्रांजेक्शन करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया, हालांकि पुलिस टीम को मौके से नकदी बरामद नहीं हुई, लेकिन बताया जा रहा है कि मामला कथित करोड़ों रुपये के लेन-देन से जुड़ा है। इस संबंध में जानकारी मिली है कि कुछ दिन पहले जम्मू-कश्मीर के कठुआ जिले के लखनपुर क्षेत्र पुलिस द्वारा एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया था, गिरफ्तार किए गए युवक पर आरोप है कि वह पाकिस्तान के माध्यम से करोड़ों रुपये के ट्रांजेक्शन करता था।

पुलिस की पूछताछ के दौरान आरोपी ने कलियर क्षेत्र के आसफनगर गांव निवासी एक युवती का नाम बताया, जिसके बाद जम्मू-कश्मीर पुलिस पिरान कलियर पहुंची और स्थानीय पुलिस से संपर्क किया, जिसके बाद स्थानीय पुलिस की मदद से आसफनगर गांव में छापा मारा गया, बताया जा रहा है कि पुलिस को युवती की पहचान करने में करीब दो से ढाई घंटे का समय लगा और पहचान होने के बाद युवती को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई, वहीं लंबी पूछताछ के बाद पुलिस ने ट्रांजिट रिमांड हासिल किया और उसे अपने साथ लेकर चली गई। बहरहाल अचानक हुई इस कार्रवाई से युवती के परिजन और आसपास के लोग हैरान रह गए, वहीं क्षेत्र में हुई इस घटना के बाद पूरे इलाके में चर्चाओं का बाजार गरमाया हुआ है। इस मामले में एसपी देहात शेखर चंद्र सुयाल ने बताया कि युवती का एकाउंट म्यूल एकाउंट के रूप में इस्तेमाल हुआ था और युवती के एकाउंट से बड़ी मात्रा में ट्रांजेक्शन हुआ है। हालांकि ये मामला जम्मू-कश्मीर में दर्ज मामले से संबंधित है, इसलिए स्थानीय पुलिस ने सीमित सहयोग किया और उन्होंने युवती की गिरफ्तारी की पुष्टि की है।

बाघों की मौत बेहद गंभीर, दोषियों पर होगी कड़ी कार्रवाई: वन मंत्री

हरिद्वार । श्यामपुर रेंज में दो बाघों की संदिग्ध मौत के मामले को वन मंत्री सुबोध उनियाल ने गंभीरता से लेते हुए उच्चस्तरीय जांच के निर्देश दिए हैं। बुधवार को घटनास्थल पहुंचे मंत्री ने अधिकारियों से पूरे मामले की जानकारी ली और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने को कहा। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि यदि जांच में किसी स्तर पर विभागीय लापरवाही सामने आती है तो संबंधित अधिकारियों को तत्काल निलंबित किया जाए। मंत्री ने कहा कि वन्यजीवों के साथ क्रूरता किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं की जाएगी और फरार आरोपियों को जल्द गिरफ्तार किया जाएगा। श्यामपुर रेंज के सजनपुर बीट स्थित कंपार्टमेंट संख्या-9 में सोमवार शाम गश्त के दौरान वन विभाग की टीम को करीब दो साल के नर बाघ का शव मिला था। वन विभाग ने तत्काल कार्रवाई करते हुए एक वन गुज्जर को गिरफ्तार किया था। इसके अगले दिन उसी क्षेत्र के आसपास एक मादा बाघ का शव भी बरामद हुआ। एक साथ दो बाघों की मौत से वन विभाग में हड़कंप मच गया। जांच में सामने आया कि दोनों बाघों के चारों पैर कटे हुए थे, हालांकि उनकी खाल और दांत सुरक्षित मिले। घटनास्थल के पास एक मृत भैंस का शव भी बरामद किया गया। प्रारंभिक जांच में आशंका जताई गई कि बाघिन ने वन गुज्जरों की भैंस का शिकार किया था। इसके बाद भैंस के शव पर जहरीला पदार्थ छिड़क दिया गया, जिसे खाने से दोनों बाघों की मौत हो गई। अधिकारियों के अनुसार आरोपी रात के अंधेरे में बाघों की खाल उतारने और दांत निकालने की तैयारी में थे, लेकिन उससे पहले वन विभाग ने दबिश देकर एक आरोपी को पकड़ लिया। वन विभाग को वन गुज्जरों की संदिग्ध गतिविधियों की सूचना मुखबिर से मिली थी। सूचना के आधार पर क्षेत्र में सर्च ऑपरेशन चलाया गया, जिसके दौरान पूरे मामले का खुलासा हुआ। फिलहाल तीन आरोपी फरार हैं, जिनकी तलाश में अलग-अलग टीमें लगातार दबिश दे रही हैं। उत्तराखंड से बाहर भी टीमों को भेजा गया है। घटना के बाद कई वन गुज्जर अपने डेरे छोड़कर चले गए हैं और कई लोगों से पूछताछ की जा रही है। जांच में यह भी सामने आया है कि मृत मिले दोनों बाघ आपस में भाई-बहन थे और अपनी मां के साथ जंगल में रह रहे थे। शुरुआत में आशंका जताई जा रही थी कि कहीं बाघिन ने भी जहरीला मांस तो नहीं खा लिया, लेकिन अधिकारियों का दावा है कि बाघिन सुरक्षित है। जंगल में उसके पैरों के निशान मिलने की पुष्टि भी की गई है। वन गुज्जरों के विस्थापन के सवाल पर मंत्री सुबोध उनियाल ने कहा कि मामला न्यायालय में विचाराधीन है और अदालत के निर्णय के बाद ही आगे की कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि सरकार इस पूरे मामले को गंभीरता से ले रही है और दोषियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी।

हरिद्वार में चारधाम यात्रा रजिस्ट्रेशन सात घंटे बंद, पुलिस और यात्रियों में नोकझोंक

हरिद्वार । ऋषिकुल मैदान स्थित चारधाम यात्रा के निशुल्क ऑफलाइन पंजीकरण केंद्र पर रविवार को अव्यवस्थाएं हावी रहीं। सुबह सात से दोपहर एक बजे तक पंजीकरण प्रक्रिया बंद रहने से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को परेशानी का सामना करना पड़ा। भीषण गर्मी और लंबी कतारों के बीच कुछ यात्रियों का धैर्य जवाब दे गया, जिससे मौके पर पुलिस से उनकी नोकझोंक हो गई। दोपहर करीब एक बजे के बाद पंजीकरण प्रक्रिया दोबारा शुरू कराई गई, जिसके बाद राहत मिली। रविवार सुबह से ही बड़ी संख्या में श्रद्धालु पंजीकरण कराने के लिए केंद्र पहुंच गए थे, लेकिन तकनीकी दिक्कत और व्यवस्था बाधित होने के कारण रजिस्ट्रेशन कार्य बंद रहा। लंबा इंतजार करने के बाद कई यात्री लाइन में ही बैठ गए, जबकि कुछ लोग थकान के चलते जमीन पर लेट गए। इसी दौरान कुछ श्रद्धालुओं ने रजिस्ट्रेशन काउंटर की ओर बढ़ने की कोशिश की, जिससे पुलिस से धक्का-मुक्की की स्थिति बन गई। हालात को संभालने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल बुलाना पड़ा। मालूम हो कि पिछले कुछ दिनों से लगातार पंजीकरण में बाधा आ रही है। सर्वर डाउन के साथ-साथ चारधाम में भीड़ अधिक होने से पंजीकरण नहीं हो रहे हैं। इससे यात्रियों को यात्रा में रुकावट आ रही है। नांदेड़ महाराष्ट्र निवासी तुलाराम, मंजूनाथ, सावित्री बाई, आशा ने बताया कि तीन घंटे से लाइन में खड़े हैं। लाइन आगे ही नहीं बढ़ रही है। पुलिसकर्मियों ने बताया कि रजिस्ट्रेशन बंद किया हुआ है। कुछ पता नहीं कब शुरू होगा। उन्होंने कहा कि एक तरफ सरकार कह रही है बिना पंजीकरण के यात्रा नहीं होगी और दूसरी तरफ पंजीकरण नहीं हो रहे। पंजीकरण नहीं होने पर हजारों यात्री मायूस होकर वापस चले गए। उन्होंने बताया कि जहां भी पंजीकरण होगा करवा लेंगे। अब इतनी दूर आएं हैं तो यात्रा पूरी कर ही वापस घर जायेंगे।

रजिस्ट्रेशन केंद्र पर भीड़ बढ़ने के कारण कई यात्रियों को गेट से ही वापस लौटा दिया गया। पंजीकरण प्रक्रिया बाधित होने से केंद्र पर लगातार भीड़ बढ़ती रही। स्थिति को देखते हुए पुलिसकर्मियों ने कई यात्रियों और वाहनों को बाहर ही रोक दिया। केंद्र में बैठने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं होने से श्रद्धालुओं को भीषण गर्मी में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। यात्रियों का आरोप है कि सही जानकारी नहीं दी जाती है। इससे भ्रम की स्थिति बनी रहती है। पूछताछ केंद्र पर भी कोई ठोस जवाब नहीं मिलता कब रजिस्ट्रेशन शुरू होगा या कब तक बंद रहेगा। ऊपर से ही ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन बंद किया जाता है। विभाग की ओर से यात्रियों की सुविधा के लिए केंद्र बनाया गया है। बीच-बीच में अनुमति मिलने पर पंजीकरण करते हैं।

गंगा दशहरा पर सिद्धकुटी मेले में उमड़ी आस्था, भीषण गर्मी के बीच पहुंचे हजारों श्रद्धालु

हरिद्वार । गंगा दशहरा पर्व पर लालढांग क्षेत्र के गेंडीखाता स्थित प्राचीन सिद्धकुटी आश्रम में आयोजित पारंपरिक दो दिवसीय मेले में सोमवार को श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। भीषण गर्मी और तेज लू के बावजूद उत्तराखंड समेत उत्तर प्रदेश और हरियाणा से बड़ी संख्या में श्रद्धालु सिद्धपीठ पहुंचकर पूजा-अर्चना करते नजर आए। भक्तों ने मंदिर में प्रसाद चढ़ाकर परिवार की सुख-समृद्धि और पशुधन की रक्षा की कामना की। गंगा अवतरण दिवस और ज्येष्ठ मास के अवसर पर लगने वाला सिद्धकुटी मेला क्षेत्र की प्राचीन धार्मिक परंपराओं में शामिल है। सोमवार को बिजनौर, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर समेत सीमावर्ती जिलों से हजारों श्रद्धालु मेले में पहुंचे। सुबह से ही मंदिर परिसर और आसपास के क्षेत्र में श्रद्धालुओं की लंबी कतारें लगी रहीं। ग्रामीण क्षेत्रों से पहुंचे लोगों ने गुड़, प्रसाद और अन्य सामग्री चढ़ाकर मत्था टेका। स्थानीय मान्यता के अनुसार ग्वाले और किसान अपने पशुओं और खेती-बाड़ी से जुड़े जानवरों की सुरक्षा और खुशहाली की कामना के लिए सिद्धकुटी में पूजा-अर्चना करते हैं। इस बार श्रद्धालुओं का पहुंचना मेले से दो दिन पहले ही शुरू हो गया था, जिससे क्षेत्र में लगातार भीड़ बनी रही। सिद्धकुटी आश्रम के महंत बालक दास ने बताया कि हर वर्ष की तरह इस बार भी श्रद्धालुओं का भारी उत्साह देखने को मिला।

स्वामी,मुद्रक व प्रकाशक अवनीश कुमार द्वारा भगवती प्रिंटर्स,इण्डस्ट्रियल एरिया, हरिद्वार से छपवाकर ग्रा. बसवाखेड़ी पो. मंगलौर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।

सम्पादकः अवनीश कुमार, मो० 9410553400

ई-मेलः liveskgnews@gmail.com

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हरिद्वार न्यायालय में ही होगा)

सभी लेखों में सम्पादक की सहमति जरूरी नही है।